

नाना पाटेकर के निधन मामले में केस दर्ज

मौत के कारणों का पता लगाएगी पुलिस,देर रात हुआ अंतिम संस्कार

मुंबई (एजेंसी)। गोवा पुलिस ने अभिनेता नाना पाटेकर के निधन मामले में मेडिको-लीगल ‘अप्राकृतिक मौत’ का केस दर्ज किया है। पुलिस मौत के सही कारणों का पता लगाने के लिए पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट और परिवार के बयानों की जांच करेगी।

न्यूज एजेंसी के अनुसार, गोवा पुलिस ने बीएनएस की धारा 194 के तहत केस दर्ज किया है।

पीएसआई नितिन नाइक इसकी जांच कर रहे हैं। पणजी में दर्ज केस के मुताबिक, नाना पाटेकर को गुरुवार सुबह गोवा के डोना पाउला स्थित ओशन पार्क से मणिपाल अस्पताल,



अस्पताल ने कहा- मृत लाया गया

मणिपाल अस्पताल के ऑन्कोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉक्टर शेखर सालकर ने बताया कि नाना पाटेकर को अस्पताल में मृत अवस्था में ही लाया गया था। इसी वजह से पुलिस केस दर्ज कराना पड़ा और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए गोवा मेडिकल कॉलेज के मर्चेंडर भेजा गया। डॉक्टर के मुताबिक प्राथमिक तौर पर यह कार्डियक अरेस्ट का मामला लगता है।

बॉबोलिम लाया गया था, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। देर रात पुणे के फार्म हाउस में शव का अंतिम संस्कार किया गया।

बेटे मल्हार ने बताई देर रात अंतिम संस्कार की वजह

न्यूज एजेंसी से बातचीत में नाना के बेटे मल्हार पाटेकर ने देर रात अंतिम संस्कार करने की वजह बताई। मल्हार ने कहा कि परिवार गोवा में था और पार्थिव शरीर को पुणे स्थित गांव के फार्माइडस लाने में समय लगा गया। चूंकि निधन सुबह जल्दी हो गया था और काफी समय बीत चुका था, इसलिए परिवार ने गुरुवार को ही इसे संपन्न करने का निर्णय लिया। मल्हार ने कहा कि नाना साहब जैसे इंसान अपनी उपलब्धियों के जरिए हमेशा अमर रहते हैं। उन्होंने बताया कि मराठवाड़ा में नाम फाउंडेशन के जरिए चल रहे सामाजिक काम बंद नहीं होंगे। यह काम सीईओ गणेश थोरात की देखरेख में तेजी से आगे बढ़ाया जाएगा।

भारत का जवाब-अमेरिकी अर्थव्यवस्था यही संभाल रहे

वीजा लेकर अमेरिका में काम करने वाले बंधुआ मजदूर:वेंस

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने एच-1बी वीजा पर अमेरिका में काम करने वाले विदेशी कर्मचारियों को ‘बंधुआ मजदूर’ बताया है। भारत ने वेंस के बयान पर कड़ी आपत्ति जताई है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि अमेरिका की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में प्रवासियों की अहम भूमिका रही है। भारत ने यह भी कहा कि भारतीय पेशेवर अमेरिका की अर्थव्यवस्था, नई तकनीक, रिसर्च और रोजगार बढ़ाने में

अहम योगदान देते हैं। इससे दोनों देशों को फायदा होता है। अमेरिका में एच-1 बी वीजा पाने वालों में 71 फीसदी



भारतीय हैं। वेंस ने माइक्रोसॉफ्ट पर वीजा व्यवस्था का गलत इस्तेमाल का आरोप लगाया।

8 आईटी कंपनियों के ग्रीन कार्ड प्रोग्राम पर रोक- अमेरिकी सरकार ने 8 बड़ी आईटी कंपनियों को ग्रीन कार्ड से जुड़ी आईटी कंपनियों को प्रक्रिया से सस्पेंड कर दिया है। इनमें भारत की इन्फोसिस, टाटा, विप्रो, टीसीएस और कॉग्निजेंट के साथ माइक्रोसॉफ्ट, एडोबी और कैपजेमिनी शामिल हैं। अमेरिकी सरकार का आरोप है कि कंपनियां विदेशी कर्मचारियों के एजेंडों में शामिल हैं। अमेरिकी लोगों के रोजगार के अवसर कम कर रही है।

संक्षिप्त

समाचार

केरल के पूर्व सीएम के खिलाफ होगी एफआईआर

पिनराई विजयन और उनकी बेटी पर भ्रष्टाचार का लगा है आरोप

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल हाईकोर्ट ने शुक्रवार को भ्रष्टाचार केस में पूर्व मुख्यमंत्री पिनराई विजयन के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया। इस केस में पिनराई विजयन और उनकी बेटी टी वीणा पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं। मामला कोचीन मिनरल्स एंड रुटाइल लिमिटेड और वीणा की कंपनी एक्सलॉजिक सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड के बीच



वितीय लेन-देन से जुड़ा है। कोर्ट में याचिका देकर इस मामले में जांच की मांग की गई थी, जिसके बाद जस्टिस ए.

दरअसल, इस मामले की जांच प्रवर्तन निदेशालय कर रही थी और उसने केरल पुलिस के साथ भी इसकी जानकारी साझा की थी। इसके बाद भी राज्य पुलिस ने एफआईआर दर्ज करने के बजाय विशेष जांच टीम बनाई थी। ईडी और राज्य सरकार की दलीलें-हाईकोर्ट में सुनवाई के दौरान ईडी ने एफआईआर दर्ज करने की मांग का समर्थन किया। ईडी के वकील जयशंकर नायर ने कहा कि जांच के दौरान कई ऐसे लेन-देन सामने आए हैं, जिनकी जांच राज्य पुलिस या किसी सक्षम एजेंसी से कराना जरूरी है। राज्य की ओर से एडवोकेट जनरल जानू बाबू ने याचिका की सुनवाई योग्य होने पर शुरुआती आपत्ति जताई।

टिवशा डेथ केस में सास गिरिवाला की बड़ी मुसीबतें दहेज एवट की धाराएं हटीं,लेकिन जमानत पर संशय

जबलपुर (एजेंसी)। मॉडल टिवसा शर्मा की मौत के मामले में जेल में निरुद्ध भोपाल की पूर्व जिला एवं सत्र न्यायाधीश गिरिवाला सिंह की जमानत याचिका पर हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। जस्टिस अजय कुमार निरंकारी की एकलपीठ ने दहेज प्रतिषेध अधिनियम की धाराओं को विलोपित कर पेश की गई संशोधित याचिका स्वीकार कर ली। सुनवाई के दौरान केंद्रीय जांच ब्यूरो की ओर से बताया गया कि मामले में जुटाए गए तकनीकी साक्ष्यों को जांच के लिए



प्रयोगशाला भेजा गया है। जांच एजेंसी मामले की पड़ताल कर रही है और रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद कानून के अनुसार संबंधित न्यायालय में आगे की कार्रवाई की जाएगी। गिरिवाला सिंह की जमानत याचिका जिला न्यायालय से खारिज होने के बाद उन्होंने हाईकोर्ट का रुख किया था। पिछली सुनवाई में अदालत को बताया गया था कि दहेज की मांग से जुड़े साक्ष्य नहीं मिलने के कारण कोर्ट ने मामले में दहेज प्रतिषेध अधिनियम की धाराएं हटा दी हैं। इसके बाद एकलपीठ ने याचिकाकर्ता को दहेज एवट की धाराएं हटाकर संशोधित याचिका पेश करने के निर्देश दिए थे।

अब पीएम मोदी के नाम से जाना जाएगा नोएडा एयरपोर्ट

अग्निवीरों को 20 फीसदी आरक्षण, बिना परीक्षा जॉइनिंग मिलेगी योगी कैबिनेट का बड़ा फैसला, एयरपोर्ट में पार्किंग की सुविधा रहेगी

नोएडा (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में शुक्रवार को हुई उत्तर प्रदेश कैबिनेट की बैठक में एक अहम निर्णय लिया



गया है। नोएडा जेवर एयरपोर्ट का नाम अब नरेंद्र मोदी इंटरनेशनल एयरपोर्ट के नाम से जाना जाएगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि

जेवर स्थित नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट का नाम अब नरेंद्र मोदी इंटरनेशनल एयरपोर्ट होगा। उन्होंने बताया कि इस संबंध में शुक्रवार को कैबिनेट ने प्रस्ताव पारित कर दिया है। इस एयरपोर्ट की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसकी क्षमता एक वर्ष में लगभग 1.2 करोड़ यात्रियों को संभालने की है। यह एयरपोर्ट 1300 हेक्टेयर से अधिक भूमि में फैला हुआ है। दिल्ली-एनसीआर में बनने वाला यह दूसरा इंटरनेशनल एयरपोर्ट है। यह इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर थोड़ाभड़ कम करने में मदद करेगा। नोएडा एयरपोर्ट पर ग्राउंड ट्रांसपोर्टेशन सेंटर विकसित किया गया है।

मक्खी मारने के लिए हथौड़ा न चलाएं

सीजेपी के प्रदर्शन से पहले सख्ती पर चीफ जस्टिस की टिप्पणी

सरकार को लगाई फटकार, दिल्ली में 57 मेट्रो स्टेशन बंद, ट्रेनें रद्द

नई दिल्ली (एजेंसी)। कॉकरोच जनता पार्टी के शनिवार को होने वाले प्रदर्शन को लेकर ज्यादा सख्ती पर सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को फटकार लगाई। सीजेआई सूर्यकांत ने कहा- आपको कुछ चीजों को रोकना ही होगा। उन्हें रोकने के लिए सिर्फ उतनी ही कार्रवाई करें जितनी जरूरी हो। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आप मक्खी मारने के लिए हथौड़े का इस्तेमाल करें। इस बात का हमेशा ध्यान रखा जाना चाहिए। दरअसल सीजेपी के कल होने वाले प्रदर्शन को देखते हुए आज रात 9 बजे से 57 मेट्रो स्टेशन बंद रहेंगे। वहीं नई दिल्ली और हजरत निजामुद्दीन स्टेशन आने वाली सभी मेल और एक्सप्रेस ट्रेनें कल कैसिल रहेंगी। रेलवे ने इन ट्रेनों को उनके शुरुआती स्टेशनों से ही रद्द कर दिया है।

सुप्रीम कोर्ट बोला-

मेट्रो पर पूरी तरह रोक नहीं लगा सकते

सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि मेट्रो की आवाजाही पर पूरी तरह रोक नहीं लगाई जा सकती। अधिकारियों को मेट्रो और अन्य ट्रेनों की आवाजाही इस तरह नियंत्रित करने पर विचार करना होगा कि आम लोगों को परेशानी न हो। इस फैसले की जानकारी दी जाए और शहर में यात्रा करने वाले लोगों को परेशानी से बचाने के लिए एडवाइजरी अखबारों और वेबसाइटों पर भी प्रकाशित की जाए। इस पर तृषार मेहता ने कहा, कोर्ट ने एक उदाहरण के तौर पर यह बात कही है। यह इस तरह से रिपोर्ट नहीं करनी चाहिए कि भारत के चीफ जस्टिस ने कहा है कि सरकार मक्खी मारने के लिए हथौड़े का इस्तेमाल कर रही है।

भारतवंशी नावी पिल्ले को शांति का नोबेल पुरस्कार

फिर खाली हाथ रह गए डोनाल्ड ट्रंप, लगा बड़ा झटका

ओस्लो (एजेंसी)। मानवाधिकारों की रक्षा और न्याय के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर अमिट छाप छोड़ने वाली भारतीय मूल की दक्षिण अफ्रीकी ज्यूरिस्ट मानवाधिकारों की लड़ाई में नवनेथम ‘नावी’ पिल्ले को प्रतिष्ठित नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। दूसरी तरफ डोनाल्ड ट्रंप के हाथ फिर से खाली रह गये हैं और उन्हें इस साल भी नोबेल पुरस्कार के लिए नहीं चुना गया है। 88 वर्ष की नावी पिल्ले का जन्म दक्षिण अफ्रीका के डरबन में एक भारतीय तमिल परिवार में हुआ था। उनके दादा तमिलनाडु से दक्षिण अफ्रीका जाकर बसे थे। विपरीत परिस्थितियों और रंगभेद के दौर



में पढ़ाई पूरी कर वह दक्षिण अफ्रीका के नेटाल प्रांत में अपनी लॉ प्रैक्टिस शुरू करने वाली पहली गैर-श्वेत महिला बनी थीं। मानवाधिकारों की लड़ाई में उनका योगदान ऐतिहासिक रहा है। रंगभेद के क्रूर दौर के दौरान उन्होंने नेल्सन मंडेला के राजनीतिक बंदियों और अन्य मानवाधिकार कार्यकर्ताओं के मुकदमों की पैरवी की और जेलों में प्रताड़ना के खिलाफ आवाज उठाई। वह 2008 से 2014 तक संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त रह चुकी हैं। वह इंटरनेशनल क्रिमिनल कोर्ट की जज और रवांडा के लिए थे। ट्रिब्यूनल की अध्यक्ष भी रही हैं।



गुजरात के कच्छ में भीषण सड़क हादसा

सात मजदूरों की हो गई मौत, 20 से ज्यादा हैं घायल

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात के कच्छ स्थित खावड़ा में दुनिया के सबसे बड़े रिन्यूएबल एनर्जी पार्क के अंदर मार्ग पर तड़के एक दर्दनाक सड़क हादसा हो गया। श्रमिकों को ले जा रही एक बोलेरो और अन्य वाहन बल्कर के बीच आमने-सामने हुई भीषण टक्कर में 7 मजदूरों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 20 लोग घायल हो गए। टक्कर इतनी तीव्र थी कि गाड़ी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और उसमें कई श्रमिक फंस गए। गंभीर हादसे की सूचना मिलते ही पश्चिम कच्छ पुलिस तुरंत घटनास्थल पर पहुंची और क्रैन की मदद से फंसे हुए लोगों को बाहर निकाला, जिससे समय रहते कई ज़िंदगियों को बचाया जा सका। सभी घायलों को उपचार के लिए नजदीकी अस्पताल पहुंचाया गया है, जबकि शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए खावड़ा से भुज भेजा जा रहा है। खावड़ा आर्इ पार्क क्षेत्र में हुए इस तरह के पहले बड़े हादसे को लेकर पुलिस ने आगे की जांच शुरू कर दी है। कच्छ कलेक्टर खुद मामले को देख रहे हैं।

सुनिश्चित करें कि सब कुछ रुक न जाए

इस पर सीजेआई ने सरकार की दलीलों से सहमति जताते हुए कहा, सावधानी बरतें। बहुत ज्यादा सावधानी बरतें। इसमें कोई दिक्कत नहीं है। आप कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं। लेकिन, यह जिम्मेदारी सिर्फ सरकारी संपत्ति की हिफाजत के बारे में नहीं है। यह लोगों की हिफाजत को लेकर है। यह आपकी सॉरेंजर ड्युटी है। इन स्थानों से हमारी बेटियां, छोटे बच्चे, वरिष्ठ नागरिक, बहुत बुजुर्ग लोग और मरीज गुजरते हैं। उनकी भी हिफाजत जरूरी है। उचित कदम उठाने में किसी भी तरह से कोई दिक्कत नहीं है। लेकिन, यह सुनिश्चित करें कि सब कुछ रुक न जाए। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट में सीजेआई सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागवी और जस्टिस वी मोहना की बेंच सरकार की ओर से सीईसी ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर आयोजित प्रदर्शन से पहले जो कदम उठा रही है, उसी के खिलाफ दर्ज याचिका पर सुनवाई करते हुए ये बातें कही हैं। सर्वोच्च अदालत में याचिकाकर्ताओं की ओर से वरिष्ठ वकील कपिल सिबल ने पैरवी की है।

उपचुनाव के नतीजों में बीजेपी की बल्ले-बल्ले

बंगाल के नंदीग्राम और रेजीनगर में मिली बंपर जीत असम में बीजेपी और पुडुचेरी में एनडीए ने मारी बाजी

नई दिल्ली (एजेंसी)। चार राज्यों की 6 सीटों पर उपचुनाव की कार्टिंग संपन्न हो गई है। बंगाल की नंदीग्राम और रेजीनगर सीट पर भाजपा की बंपर जीत हुई है। नंदीग्राम में भाजपा की हसीरानी रथ को 1 लाख से ज्यादा वोट की जीत मिली है। इसी साल हुए विधानसभा चुनाव में सीएम शुभेंद्रु अधिकारी नंदीग्राम में 9 हजार वोट से जीते थे। तमिलनाडु की दोनों मंदुरंतकम और धारापुरम सीटों पर सीएम विजय की पार्टी टीवीके ने बड़ी जीत हासिल की है। पुडुचेरी की थट्टनचावडी सीट पर एनडीए समर्थित उम्मीदवार अशोक आनंद जीत गए हैं। असम की नगांव लोकसभा सीट पर भाजपा ने बड़ी जीत हासिल की है।



बीजेपी उम्मीदवार हसीरानी रथ को मिली बड़ी जीत- नंदीग्राम उपचुनाव के नतीजों आ गए हैं। बीजेपी उम्मीदवार हसीरानी रथ को एक लाख 20 हजार से अधिक वोटों से जीत मिली है। उन्होंने अपनी जीत में सीएम सुवेंदु अधिकारी का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। बंगाल में बीजेपी की सरकार बनने के बाद पहली बार उपचुनाव हुए हैं। चुनाव में बीजेपी की सुनामी देखने को मिली है।

नाना पाटेकर: अभिनय की आग में तपा असाधारण कलाकार

(लेखक- ललित गर्ग)

भारतीय सिनेमा में कुछ कलाकार ऐसे होते हैं, जिन्हें केवल अभिनेता कहना उनके व्यक्तित्व को सीमित कर देना है। नाना पाटेकर उन्ही विरल कलाकारों में से एक थे। वे अभिनेता थे, रंगकर्मी थे, निर्देशक थे, लेखक थे, सामाजिक सरोकारों से जुड़े संवेदनशील नागरिक थे और भारतीय सेना के प्रति गहरे सम्मान एवं समर्पण का उदाहरण भी थे। उनकी आवाज में खुरदुरापन था, संवादों में धार थी, आंखों में आक्रोश और चेहरे पर जीवन के संघर्षों की सच्चाई। उन्होंने अभिनय को सजावटी कला नहीं बनाया, बल्कि उसे यथार्थ जीवन के अनुभवों, पीड़ा, संघर्ष, संवेदना और सामाजिक चेतना से जोड़ा। 8 अक्टूबर 2026 को 75 वर्ष की उम्र में उनके निधन के साथ भारतीय सिनेमा ने एक ऐसा कलाकार खो दिया, जिसकी कोई दूसरी प्रतिकृति संभव नहीं है। वे अभिनय जगत के लिये एक अपरिहार्य नाम थे और ज्यादातर फिल्मप्रेमियों के लिये अजीज भी थे।

नाना की फिल्म-प्रतिभा हमें चौंकाती रही है, रोमांचित करती रही है, उकसाती रही है, वयोंकि उनकी फिल्मों की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि वे आम लोगों के जीवन की सच्चाई और उनके संघर्षों को प्रामाणिकता एवं जीवंतता के साथ प्रस्तुत करते रहे हैं। भारतीय जिंदगी के रंग बेशुमार हैं, कला-संस्कृति की अविस्मरणीय धाराएं हैं, अनूठा एवं बेजोड़ इतिहास और उसकी कहानियां भी अनंत-अथाह। नाना का फिल्मी-युग भारत की खिड़की से विश्व को देखने एवं विश्व को भारत दिखाने की पहल का एक स्वर्णिम युग है। उन्होंने अपने किरदार से राष्ट्रीयता की भावना को भी सुदृढ़ किया। नाना का सफरनामा पूरी तरह मायूस हो चुकें किसी भी इंसान के लिये प्रेरणादायी अध्याय भी है, उसाह की मिसाल भी है। नाना पाटेकर का वास्तविक नाम विश्वनाथ पाटेकर था। उनका जन्म 1 जनवरी 1951 को महाराष्ट्र के मुरुड-जंजीरा में हुआ। बचपन सामान्य था, लेकिन किशोरावस्था में ही परिवार आर्थिक संकट में धिर गया। पिता का कारोबार डूब गया और महज 13 वर्ष की उम्र में नाना को परिवार की मदद के लिए काम करना पड़ा। वे स्कूल के बाद मुंबई में फिल्म पोस्टर रंगते थे और करीब 3.5 रुपये महीने कमाते थे। काम पर जाने के लिए उन्हें कई किलोमीटर पैदल चलना पड़ता था और बदले में एक वक्त का भोजन भी मिलता था। गरीबी और अभाव ने उन्हें

तोड़ा नहीं, बल्कि भीतर से गढ़ा। बाद में उन्होंने स्वयं स्वीकार किया कि भूख और अपमान ने उन्हें जीवन को समझना सिखाया।

कला नाना के जीवन में आरंभ से थी। उन्होंने सर जे.जे. इंस्टीट्यूट ऑफ़ एप्लाइड आर्ट में शिक्षा ली और व्यावसायिक कलाकार के रूप में काम किया। लेकिन उनका वास्तविक विद्यालय था रंगमंच। मराठी रंगमंच की प्रख्यात निर्देशिका विजया मेहता के मार्गदर्शन में उन्होंने अभिनय की बारीकियां सीखीं। हमीदाबाईची कोठी जैसे नाटकों ने उन्हें गंभीर रंगकर्मी के रूप में पहचान दी। रंगमंच ने उन्हें संवाद बोलना ही नहीं, बल्कि संवाद के पीछे छिपी भावना को जीना सिखाया। नाना के करियर की शुरुआत फिल्म ‘गमन’ से हुई थी लेकिन इंडस्ट्री में उन्हें फिल्म ‘परिदा’ से नोटिस किया गया जिसमें उन्होंने खलनायक की भूमिका अदा की थी। इस फिल्म में उनके अभिनय के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार भी दिया गया। इसके बाद उन्होंने कई अच्छी फिल्मों में काम किया और अपने अभिनय का लोहा मनवाया। क्रांतिवीर, खामोशी, यशवंत, अब तक छप्पन, अपहरण, वेलकम, राजनीति उनकी प्रमुख फिल्मों में से एक हैं। शुरुआती वर्षों की निराशाओं के बावजूद उन्होंने अपनी राह नहीं छोड़ी। अंकुश और सलाम बॉम्ब! जैसी फिल्मों ने उनकी प्रतिभा को पहचान दिलाई।

इसके बाद नाना पाटेकर ने एक के बाद एक ऐसे किरदार निभाए, जिन्होंने हिंदी सिनेमा में अभिनय की एक अलग भाषा निर्मित की। ‘अंगार’ में उनका नकारात्मक किरदार, ‘तिरंगा’ में देशभक्ति से ओतप्रोत शिवाजी राव वालें, ‘क्रांतिवीर’ में प्रखर और विद्रोही प्रताप नारायण तिलक, ‘अग्निसाक्षी’ में जटिल मानसिकता वाला पात्र और ‘खामोशी- द म्यूजिकल’ में संवेदनशील पिता-हर भूमिका में वे बिल्कुल अलग दिखाई दिए। क्रांतिवीर के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला, जबकि अग्निसाक्षी के लिए फिर राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित हुए। इस तरह वे तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार पाने वाले विशिष्ट अभिनेताओं में शामिल हुए। नाना की अभिनयशैली का सबसे बड़ा गुण था स्वाभाविकता के भीतर तीव्रता। वे संवाद को केवल बोलते नहीं थे, उसे जीते थे। उनकी आवाज कभी धीमी फुसफुसाहट बन जाती तो कभी विस्फोट की तरह फूटती। उनका चेहरा, आंखों की हरकत, हाथों का इस्तेमाल, अचानक आने

वाला ठहराव और फिर तेज गति से निकलते संवाद-इन सबका अपना नाटकीय व्याकरण था। उनकी संवाद-अदायगी इतनी विशिष्ट थी कि साधारण वाक्य भी उनके मुंह से निकलकर यादगार बन जाता था। वे संवादों को अभिनय से बड़ा नहीं होने देते थे, बल्कि अभिनय के माध्यम से संवाद को अर्थ देते थे।

नाना की लोकप्रियता का एक अलग अध्याय ‘वेलकम’ है। गंभीर और आक्रामक भूमिकाओं के लिए पहचाने जाने वाले नाना ने उदय शेट्टी के रूप में ऐसी कॉमेडी की कि नई पीढ़ी भी उनकी मुरीद हो गई। उनका ‘कंट्रोल, उदय, कंट्रोल!’ जैसे संवाद और चेहरे के हावभाव आज भी लोकप्रिय संस्कृति का हिस्सा हैं। यह उनकी अभिनय-बहुमुखी प्रतिभा का प्रमाण था कि जो कलाकार परिंदा और क्रांतिवीर में दर्शकों को भीतर तक हिला सकता था, वही वेलकम में उन्हें खुलकर हंसा भी सकता था। 2000 के दशक में ‘अब तक छप्पन’, अपहरण, शक्ति- द पावर, राजनीति जैसी फिल्मों में उन्होंने उम्र और अनुभव के साथ अपने अभिनय को और गहरा किया। अब तक छप्पन के पुलिस अधिकारी का किरदार हो या राजनीति में राजनीतिक संघर्षों के बीच खड़ा चरित्र-नाना हमेशा चरित्र की भीतरी बेचैनी को सामने लाते थे। मराठी सिनेमा में भी उन्होंने अपनी जड़ों को नहीं छोड़ा। ‘नटसम्राट’ (2016) में रंगमंच के दिग्गज कलाकार की भूमिका उनके करियर की सबसे मार्मिक प्रस्तुतियों में गिनी जाती है।

नाना केवल अभिनेता बनकर संतुष्ट नहीं थे। ‘प्रहार- द फाइनल अटैक’ का निर्देशन करके उन्होंने यह साबित किया कि उनके भीतर निर्देशक और लेखक भी मौजूद है। इस फिल्म की तैयारी के दौरान उन्होंने आका कटोर प्रशिक्षण लिया। आगे चलकर उनका भारतीय सेना से संबंध वास्तविक जीवन का हिस्सा बन गया। वे टेरिस्टोरियल आर्मी से जुड़े और लेफ्टिनेंट कर्नल के मानद पद तक पहुंचे। 1999 के कारगिल युद्ध के दौरान भी वे सैनिकों के साथ रहे। पद पर देशभक्ति का अभिनय करने वाले इस कलाकार ने वास्तविक जीवन में भी सैनिकों के बीच जाकर देश के प्रति अपना सम्मान व्यक्त किया। उनकी राष्ट्रीयता किसी नारे की तरह नहीं थी, उसमें कर्तव्य और संवेदना थी। तिरंगा, प्रहार और क्रांतिवीर जैसी फिल्मों में देश, समाज और नागरिक जिम्मेदारी के प्रश्न दिखाई देते हैं। वे देशभक्ति को केवल सीमा पर लड़ने वाले सैनिक की भावना तक सीमित नहीं मानते थे, बल्कि ईमानदारी से अपना काम करना, कमजोर के साथ

खड़ा होना और समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाना भी राष्ट्रसेवा का हिस्सा मानते थे। उनके व्यक्तित्व की दूसरी बड़ी विशेषता थी सादगी और सामाजिक प्रतिबद्धता। महाराष्ट्र के किसानों की समस्याओं और ग्रामीण संकट से वे गहराई से जुड़े। 2015 में उन्होंने अभिनेता मकरंद अनासपुरे के साथ नाम काउंडेशन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य किसानों और सूखा प्रभावित ग्रामीण परिवारों की सहायता करना था। उन्होंने राहत एवं सामाजिक कार्यों में आर्थिक सहयोग भी किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिग्गज अभिनेता नाना पाटेकर के निधन पर शोक व्यक्त किया कि वे एक सच्चे ‘क्रांतिवीर’ थे जिन्होंने सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उनकी खामोशी उतनी ही असरदार थी जितनी उनकी दमदार आवाज। उन्होंने हमेशा देश-विरोधी तत्वों पर लगाम लगाने की वकालत की।

नाना पाटेकर की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि उन्होंने स्टार बनने की कोशिश नहीं की, कलाकार बने रहे। वे ग्लैमर की दुनिया में रहते हुए भी अपनी जड़ों से कटे नहीं। गरीबी ने उन्हें संवेदनशील बनाया, रंगमंच ने अनुशासन दिया, फिल्मों ने व्यापक पहचान दी, सेना ने राष्ट्रबोध को मजबूत किया और सामाजिक कार्यों ने उनके भीतर के मनुष्य को जीवित रखा। उनके अभिनय की विरासत केवल पुरस्कारों में नहीं, उन पात्रों में है जिन्हें उन्होंने अमर कर दिया। परिंदा का अत्रा, क्रांतिवीर का प्रताप, तिरंगा का शिवाजी राव, अब तक छप्पन का पुलिस अधिकारी, नटसम्राट का गणपत बेलवलकर और वेलकम का उदय शेट्टी-ये सभी नाना के अलग-अलग चेहरे हैं, लेकिन इनके पीछे एक ही कलाकार है, जो अभिनय को दिखाता नहीं था, संवेदनशीलता के साथ जीता था। नाना पाटेकर का जीवन हमें यह संदेश देता है कि प्रतिभा अवसर की मोहताज नहीं होती। जिस किशोर ने कभी 3.5 रुपये महीने के लिए फिल्म पोस्टर रंगे थे, वही आगे चलकर तीन राष्ट्रीय पुरस्कारों और पद्मश्री से सम्मानित हुआ। भारत ने एक अभिनेता खोया है, लेकिन उसकी कला, आवाज, संवाद, संघर्ष और संवेदनशील नागरिक की छवि लंबे समय तक जीवित रहेगी। नाना पाटेकर की सबसे बड़ी फिल्म शायद उनका अपना जीवन था-संघर्ष से शुरू हुई, संवेदना से समृद्ध हुई और कर्म की सच्चाई पर समाप्त हुई।

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

मेडीकल कॉलेजों की संख्या बढ़ाना स्वास्थ्य सेवाओं के लिये नुकसानदेह

(लेखक- डॉ योगेन्द्र श्रीवास्तव)

पिछले कुछ सालों से देश भर में नये मेडीकल कॉलेज खोलने की होड़ मची हुई है और कोई भी राज्य सरकार पीछे नहीं छूटना चाहती इसलिए जब तब नये मेडीकल कॉलेज खोलने की घोषणाएँ अखबारों की सुर्खियों में रहती हैं। हाल ही में मध्यप्रदेश सरकार ने भी 12 और मेडीकल कॉलेज खोलने की घोषणा की है। देश के अन्य राज्यों में भी स्वास्थ्य सेवाओं के प्रसार की यही कहानी है और नतीजा यह कि 2014 में 387 से बढ़कर 2026 में मेडीकल कॉलेजों की संख्या 858 हो चुकी है। इसी अवधि में एमबीबीएस की सीटें 51 हजार से बढ़कर एक लाख 1 लाख 40 हजार तथा पीजी की सीटें 31 हजार से बढ़कर 86 हजार हो चुकी हैं। इस बीच महाराष्ट्र आईएमए के प्रदेश सहसचिव डॉ अनुपम ताकलकर का बयान गौरतलब है कि इस बढ़ोतरी पर विराम देने की जरूरत है क्योंकि इससे शिक्षा की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की पूरी आशंका है।

वाकई इस मामले पर पुनर्विचार एवं गहन मंथन की आवश्यकता है। जनता में लोकप्रियता हासिल करने के लिये राजनेता इस तथाकथित विकास का आश्वासन दे रहे हैं परन्तु वास्तव में यह औचित्यहीन कदम स्वास्थ्य सेवाओं पर बुरा असर डालने वाला है। दरअसल किसी अन्य शिक्षा संस्थान की तुलना में मेडीकल शिक्षा एकदम अलग है। उदाहरण के लिये एक बढ़िया तकनीकी संस्थान खोलने में जमीन, भवन, हॉस्टल, प्रयोगशाला, उपकरण तथा शिक्षकों की व्यवस्था करना ही पर्याप्त होता है। लेकिन

मेडीकल कॉलेज में इन सबकी व्यवस्था के अलावा एक और अनिवार्य जरूरत होती है कि वहां बड़ी संख्या में मरीज भी आयें। तकनीकी शिक्षा तो किसी उन्नत प्रयोगशाला में ही प्राप्त की जा सकती है जबकि मेडीकल शिक्षा के लिये मरीज एक अनिवार्य फैक्टर है क्योंकि यह पढ़ाई ऐसी है जिसमें छात्रों से मरीज देखने एवं रोग का निदान तथा उपचार करने का ही कार्य करवाया जाता है। अन्य तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने के बाद उक्त छात्र को तजुर्बे के लिये कहीं वास्तविक काम करके व्यावहारिक तजुर्बा लेना पड़ता है जबकि एक नया एमबीबीएस किसी मरते हुए इन्सान की जान बचा सकता है।

यद्यपि मेडीकल कॉलेज खोलने के लिये निर्धारित न्यूनतम जमीन की शर्त अब हटा दी गई है लेकिन फिर भी इसके लिये काफी ज्यादा जमीन की जरूरत होती है जो आम तौर पर शहरों के बीच उपलब्ध नहीं होती। इसलिए नए मेडीकल कॉलेज शहर से दूर स्थानों पर बनाए जाते हैं। सर्वविदित है कि ऐसे बहुत से नये मेडीकल कॉलेजों में मरीजों का पहुंचना आसान नहीं है। इसके लिये कहीं कहीं मुफ्त ऑटो या मुफ्त बस सेवा की व्यवस्था की जाती है। फिर भी वांछित संख्या में मरीज नहीं पहुंच पाते। उस पर शिक्षकों का अभाव दूसरी बड़ी समस्या है। मेडीकल शिक्षा की नियामक संस्था एनएमसी के निरीक्षण दौरे के समय शिक्षकों को उपस्थित अवश्य दिखा दिया जाता है लेकिन ये सिर्फ खानापूरी के लिये आते हैं। हालत यह है कि अधिकांश मेडीकल कॉलेज इसी तरह की घोस्ट फैकल्टी (छद्म शिक्षक) से चल रहे हैं। परिणामस्वरूप खूबसूरत बिल्डिंग और

अत्याधुनिक इफास्ट्रक्चर के बावजूद ऐसे कॉलेजों में एकेडमिक तथा प्रैक्टिकल शिक्षा आधी अधूरी ही हो पाती है। वही हाल पीजी शिक्षण का भी है। इस वजह से बहुत से ऐसे डॉक्टर तैयार किये जा रहे हैं जिनका वलीनिकल ज्ञान अधूरा है और वे पर्याप्त प्रशिक्षण के बिना ही मरीजों का उपचार करने के लिये अधिकृत हैं।

ऐसा नहीं कि एनएमसी को इन सब धांधलियों की जानकारी नहीं लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि गैरजरूरी मेडीकल कॉलेज खोलने के राज्य सरकारों के लोकप्रिय अभियान को चालू रखने के लिये एनएमसी भी खानापूरी में पूरा सहयोग दे रही है। वैसे से भी देश में वास्तविक स्थितियों को नजरअंदाज करके कागजी कार्रवाई को प्राथमिकता देने की परम्परा है। स्वास्थ्य सम्बन्धी अन्य योजनाओं का भी यही हाल है। उचित गाइडलाइंस के अभाव में आयुष्मान योजना भी दम तोड़ रही है। सरकार अस्पतालों पर दोष मढ़ती है और अस्पताल सालों से लम्बित पड़े करोड़ों के बाकी भुगतान को लेकर लामबंद हो रहे हैं। ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्र बिल्कुल खस्ताहाल हैं जहां न दवाएं हैं और न ही डॉक्टर। जिला अस्पतालों में भी डॉक्टर और स्टॉफ के सैकड़ों पद खाली हैं जिससे वे मरीजों का दबाव झेलने में असमर्थ हैं। लेकिन कागजों पर स्वास्थ्य सेवाओं का विकास जारी है जिसमें नए नए मेडीकल कॉलेज खोलना एक शिगूफे के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है।

ऐसा प्रतीत होता है कि धीरे धीरे ये वास्तविकता आम जनता को भी समझ आ रही है। अभी जारी

अपूर्णता से पूर्णता की ओर

मनुष्य का बाह्य जीवन वस्तुतः उसके आंतरिक स्वरूप का प्रतिबिम्ब मात्र होता है। जैसे ड्राइवर मोटर की दिशा में मनचाहा बदलाव कर सकता है। उसी प्रकार, जीवन के बाहरी ढर्रे में भारी और आश्चर्यकारी परिवर्तन हो सकता है। वाल्मीकि और अंगुलिमाल जैसे भयंकर डाकू क्षण भर में परिवर्तित होकर इतिहास प्रसिद्ध संत बन गये। गणिका और आम्रपाली जैसी वीरांगनाओं को सती-साध्वी का प्रातः स्मरणीय स्वरूप ग्रहण करते देर न लगी। वामित्र और भतुहरि जैसे विलासी राजा उच्च कोटि के योगी बन गये। नृशंस अशोक बौद्ध धर्म का महान प्रचारक बना। तुलसीदास की कामुकता का भक्ति भावना में परिणत हो जाना प्रसिद्ध है। ऐसे असंख्य चरित्र इतिहास में पढ़े जा सकते हैं। छोटी श्रेणी में छोटें-मोटे आश्चर्यजनक परिवर्तन नित्य ही देखने को मिल सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि जीवन का बाहरी ढर्रा जो फिर प्रयत्न से बना हुआ होता है, विचारों में भावनाओं में परिवर्तन आते ही बदल जाता है। मित्र को शत्रु बनते, शत्रु को मित्र रूप में परिणत होते, दुष्ट को संत बनने, संत को दुष्टता पर उतरते, कंजूस को उदार, उदार को कंजूस, विषयी को तपस्वी, तपस्वी को विषयी बनते देर नहीं लगती।

कर रहा है। इसके बाद भी रुपया गिरने से रुक नहीं रहा है। रही सही कसर कच्चे तेल के दाम बढ़ने से डालर की मांग बढ़ती जा रही है, जिसके कारण डॉलर के मुकाबले रुपये के लगاتार गिरावट देखी जा रही है। कच्चे तेल और डॉलर का भारतीय अर्थव्यवस्था में एक बड़ा दबाव देखने को मिल रहा है। जैसे-जैसे डॉलर के रेट रुपए के मुकाबले बढ़ रहे हैं, इसका सबसे बड़ा नुकसान भारत को उठाना पड़ रहा है।

आखिर शेयर बाजार की यह हालत क्यों हुई, इसको लेकर तरह-तरह की बातें सामने आ रही हैं। रिजर्व बैंक ऑफ़ इंडिया ने हाल ही में रेपो रेट में बदलाव किया है। रेपो रेट ०.25 आंशर अंक बढ़कर 5.50 की गई है। इसको लेकर शेयर मार्केट में घबराहट देखने को मिल रही है। वैश्विक देशों के शेयर बाजारों में भी इन दिनों भारी उथल-पुथल मची हुई है। जिसका

असर भारतीय शेयर बाजार में दिख रहा है।

सबसे बड़ी चिंता की बात यह है, भारत के शेयर बाजार से विदेशी निवेश लगातार निकलता चला जा रहा है, जिसके कारण डोमेस्टिक निवेशक भी घबराहट में आ गए हैं। भारत की वित्तीय संस्थाओं के ऊपर भी भारी दबाव देखने को मिल रहा है। इससे भारत का शेयर बाजार निकट भविष्य में सुख पायेगा? इसको लेकर तरह-तरह की चिंता व्यक्त की जाने लगी है। रही सही कसर अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप दादा ने पूरी कर दी है। ट्रंप ने एक नया फरमान जारी किया है। जिसमें भारत की 8 आईटी कंपनियों को पीईआरएम प्रोग्राम से बाहर किया है। इनमें इंफोसिस, टीसीएस, विप्रो, कॉर्निजेट, कैपजेमिनी सहित आठ कंपनियों के कर्मचारियों को अमेरिकी ग्रीन कार्ड प्रक्रिया से बाहर कर दिया गया है। इनमें माइक्रोसॉफ्ट और एडोब भी शामिल है। इसका असर

भारतीय कंपनियों में पड़ना तय है। ट्रंप के इस कदम से भारतीय आईटी कंपनियों को अमेरिका में काम मिलने से दिक्रत होगी, जिसका प्रभाव इन कंपनियों पर पड़ना तय है। पिछले 2 साल से भारतीय शेयर बाजार की हालत खस्ता है। शेयर बाजार को संभालने के लिए जितने भी प्रयास किए जा रहे हैं, अब सब उल्टे पड़ रहे हैं। ऐसा लगता है, ग्रह नक्षत्र ने जो दशा बदली है। इसका सबसे बड़ा असर शेयर बाजार में देखने को मिल रहा है।

शेयर बाजार और भारतीय राजनीति में इन दिनों कब कौन सा परिवर्तन हो जाए, कहा नहीं जा सकता है। भारत की अर्थव्यवस्था को लेकर जिस तरह की चिंता अर्थशास्त्री व्यक्त कर रहे हैं, वह विवाणीय है। उनका कहना है, भारत में इतने बड़े आर्थिक संकट के दौर में अच्छे अर्थशास्त्रियों का नहीं होना, सरकार द्वारा स्वयं निर्णय लेना, अर्थशास्त्रियों की सलाह को नहीं

मानना, समय पर निर्णय नहीं लिए जाने के कारण भारतीय शेयर बाजार और भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति आने वाले दिनों में और भी खराब हो सकती है। शेयर बाजार में मंदणियों का कब्जा होता चला जा रहा है। तेजडिंये शेयर बाजार से नदारत हैं। इससे भारतीय वित्तीय संस्थानों की भी चिंता बढ़ती जा रही है। उन्हें अपनी बैलेंस शीट और मुनाफे को लेकर चिंता होने लगी है। बाजार के वर्तमान हालात को देखते हुए लोगों को अब हर्षद मेहता और 1992 के शेयर बाजार में हुए घोटाले की भी याद आने लगी है। सरकार के खिलाफ आंदोलन प्रदर्शन चल रहे हैं। ऐसी विषम स्थिति में जब सरकार को अर्थव्यवस्था पर ध्यान देना था, उस समय पर वह अपने आंकड़ो बचाने में लगी हुई है। ऐसी स्थिति में भारतीय अर्थ व्यवस्था और शेयर बाजार को लेकर सभी जगह चिंता देखने को मिल रही है।

संपादकीय

फार्मा कंपनियों के तोहफ़े

लंबे समय से यह बात सार्वजनिक विमर्श में रही है कि मरीजों के हितों पर कुदाराघात करके, फार्मा कंपनियां उपहार देकर चंद डॉक्टरों व अस्पतालों को साध रही हैं। फॉर्मा कंपनियां हजारों करोड़ रुपये का बजट डॉक्टरों को खुश करने के लिये रखती हैं ताकि उनके उत्पाद खरीदने के लिये मरीजों को बाध्य किया जा सके। विडंबना यह है कि सरकारें सब-कुछ जानते-बूझते हुए भी खामोश बैठी रहती हैं। यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट को केंद्र सरकार को अब निर्देश देना पड़ा है कि वह फार्मा कंपनियों की अनैतिक मार्केटिंग पर अविलंब रोक लगाए। बाकायदा, डॉक्टरों को खुश करने के लिये, तोहफे देने वाली फार्मा कंपनियों पर लगाम लगाने के लिये विशेषज्ञ कमेटी बनायी जाए। निश्चय ही इस अपवित्र गठजोड़ को नियामक तंत्र के दायरे में लाने की दिशा में यह एक स्वागत योग्य कदम होगा। निर्विवाद रूप से यह एक हकीकत है कि आर्थिक प्रलोभन या कीमती तोहफे मरीजों को दिए जाने वाले दवाइयों के परामर्श को प्रभावित करते हैं। फार्मा कंपनियों के इशारे पर लिखे गए प्रिस्क्रिप्शन का असर मरीजों और उनकी उपचार लागत पर पड़ता है। इस अनैतिक प्रवृति पर रोक लगाने की दिशा में अदालत की पहल वक्त की जरूरत है। अदालत में वादी द्वारा दायर याचिका में इस बात पर बल दिया गया था कि फार्मा कंपनियां चुनिंदा दवाइयों की बिस्की बढ़ाने के लिये चिकित्सकों को महंगे तोहफे, विदेश यात्राएं आदि अन्य प्रकार के लाभ पहुंचाती हैं। निश्चित रूप से ऐसी अनैतिक परंपराएं जहां एक ओर विलिनकल फैसलों पर प्रभाव डाल सकती हैं, वहीं जरूरत से ज्यादा दवा लिखने की गलत प्रवृति को भी बढ़ावा दे सकती हैं। दरअसल, रोगों से जुझ रहा मरीज या तिमारदार आमतौर पर यह निर्णय नहीं ले पाते कि कोई दवा कितनी जरूरी है या नहीं है। यह भी कि किसी दवा का बाजार में अन्य सस्ता विकल्प मौजूद है कि नहीं। लेकिन इस प्रलोभन नीति के चलते फार्मा कंपनियां अपना उछू संीधा करने में कामयाब हो जाती हैं। यहां यह तथ्य उल्लेखनीय है कि देश में इस अनैतिक परिपाटी पर अंकुश लगाने के प्रावधान पहले से ही मौजूद हैं। पहले से ही यूनिकॉर्म कोड फॉर फार्मास्युटिकल मार्केटिंग प्रैक्टिसिज-2024 के तहत डॉक्टरों को फार्मा कंपनियों से किसी भी प्रकार के तोहफे लेने, देश-विदेश की महंगी यात्राओं की सुविधाएं पाने या किसी भी तरह से आर्थिक लाभ लेने पर रोक लगाई गई है। बाकायदा इस बाबत शिकायत आने पर उसके निपटारे के लिये भी व्यवस्था की गई है। उल्लेखनीय है कि शिकायतों के निपटारे के लिये एथिक्स कमेटी, खर्चों की जानकारी देने और शीर्ष पैनल सिस्टम भी मौजूद हैं। वह बात अलग है कि नियामक संस्थाएं यदा-कदा ही जागती हैं। इसके बावजूद, केंद्र सरकार ने महत्वपूर्ण सवाल को माना है कि क्या फार्मा कंपनियों को किसी कानूनी नियम-कायदे के दायरे में लाया जाना चाहिए? पुराने अनुभव तो यही बताते हैं कि स्वेच्छा से नियमों का पालन करना एक व्यावहारिक विकल्प नहीं हो पाता है। उपभोक्ताओं व मरीजों में जागरूकता के अभाव में ऐसे मामले होने के बावजूद बहुत कम शिकायतें सामने आती हैं। इसका मतलब यह कहाँपि नहीं है कि फार्मा कंपनियों का खेल जारी नहीं है। दरअसल,कम शिकायतें सामने आने की अन्य कई वजहें हैं।

शेयर बाजार में मंदणियों का कब्जा होता

चला जा रहा है। तेजडिंये शेयर बाजार से

नदारत हैं। इससे भारतीय वित्तीय संस्थाओं

की भी चिंता बढ़ती जा रही है। उन्हें अपनी

बैलेंस शीट और मुनाफे को लेकर चिंता

होने लगी है। बाजार के वर्तमान हालात को

देखते हुए लोगों को अब हर्षद मेहता और

1992 के शेयर बाजार में हुए घोटाले की भी

याद आने लगी है। सरकार के खिलाफ

आंदोलन प्रदर्शन चल रहे हैं।



भिंडी एक लोकप्रिय सब्जी है। सब्जियों में भिंडी का प्रमुख स्थान है जिसे लोग लेडीज फिंगर या ओकरा के नाम से भी जानते हैं। भिंडी की अगेती फसल लगाकर किसान भाई अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। मुख्य Lady Fingerv रुप से भिंडी में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवणों जैसे कैल्शियम, फास्फोरस के अतिरिक्त विटामिन ए, बी, सी, थाईमीन एवं रिबोफ्लेविन भी पाया जाता है।

मेन्कोजेब कार्बेन्डाजिम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। पूरे खेत को उचित आकार की पट्टियों में बांट लें जिससे कि सिंचाई करने में सुविधा हो। वर्षा ऋतु में जल भराव से बचाव हेतु उठी हुई क्यारियों में भिण्डी की बुवाई करना उचित रहता है।
बुआई का समय
ग्रीष्मकालीन भिंडी की बुवाई फरवरी-मार्च में तथा वर्षाकालीन भिंडी की बुवाई जून-जुलाई में की जाती है। यदि भिंडी की फसल लगातार लेनी है तो तीन सप्ताह के अंतराल पर फरवरी से जुलाई के मध्य अलग-अलग खेतों में भिंडी की बुवाई की जा सकती है।

भिंडी की खेती-बुआई एवं खेत की तैयारी

इसमें विटामिन ए तथा सी पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं। भिंडी के फल में आयोडीन की मात्रा अधिक होती है। भिंडी का फल कब्ज रोगी के लिए विशेष गुणकारी होता है। म.प्र. में लगभग 23500 हे. में इसकी खेती होती है। प्रदेश के सभी जिलों में इसकी खेती की जा सकती है। अधिक उत्पादन तथा मौसम की भिंडी की उपज प्राप्त करने के लिए संकर भिंडी की किस्मों का विकास कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किया गया है। ये किस्में यलो वेन मोजक वाइरस रोग को सहन करने की अधिक क्षमता रखती हैं। इसलिए वैज्ञानिक विधि से खेती करने पर उच्च गुणवत्ता का उत्पादन कर सकते हैं।

भूमि व खेत की तैयारी

भिंडी के लिये दीर्घ अवधि का गर्म व नम वातावरण श्रेष्ठ माना जाता है। बीज उगने के लिये 27-30 डिग्री सेग्रे तापमान उपयुक्त होता है तथा 17 डिग्री सेग्रे से कम पर बीज अंकुरित नहीं होता। यह फसल ग्रीष्म तथा खरीफ, दोनों ही ऋतुओं में उगाई जाती है। भिंडी को उत्तम जल निकास वाली सभी तरह की भूमियों में उगाया जा सकता है। भूमि का पी0 एच मान 7.0 से 7.8 होना उपयुक्त रहता है। भूमि की दो-तीन बार जुलाई कर भुरभुरी कर तथा पाटा चलाकर समतल कर लेना चाहिए।

उत्तम किस्में

पूसा ए-4

यह भिंडी की एक उन्नत किस्म है। यह प्रजाति 1995 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा निकाली गई है। यह एफिड तथा जैसिड के प्रति सहनशील है। यह पीतरोग येलो वेन मोजेक विषाणु रोधी है। फल मध्यम आकार के गहरे, कम लस वाले, 12-15 सेंमी लंबे तथा आकर्षक होते हैं। बोन के लगभग 15 दिन बाद से फल आना शुरू हो जाते हैं तथा पहली तुड़ाई 45 दिनों बाद शुरू हो जाती है। इसकी औसत पैदावार ग्रीष्म में 10 टन व खरीफ में

15 टन प्रति हे।

परभनी क्रांति

यह किस्म पीत-रोगरोधी है। यह प्रजाति 1985 में मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, परभनी द्वारा निकाली गई है। फल बुआई के लगभग 50 दिन बाद आना शुरू हो जाते हैं। फल गहरे हरे एवं 15-18 सेंमी लम्बे होते हैं। इसकी पैदावार 9-12 टन प्रति हे।

पंजाब-7

यह किस्म भी पीतरोग रोधी है। यह प्रजाति पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा निकाली गई है। फल हरे एवं मध्यम आकार के होते हैं। बुआई के लगभग 55 दिन बाद फल आने शुरू हो जाते हैं। इसकी पैदावार 8-12 टन प्रति हे।

अर्का अभय

यह प्रजाति भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलोर द्वारा निकाली गई है। यह प्रजाति येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी है। इसके पौधे ऊँचे 120-150 सेंमी सीधे तथा अच्छी शाखा युक्त होते हैं। अर्का अनामिका यह प्रजाति भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलोर द्वारा निकाली गई है। यह प्रजाति येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी है। इसके पौधे ऊँचे 120-150 सेंमी सीधे व अच्छी शाखा युक्त होते हैं। फल रोमरहित मुलायम गहरे हरे तथा 5-6 धारियों वाले होते हैं। फलों का डठल लम्बा होने के कारण तोड़ने में सुविधा होती है। यह प्रजाति दोनों ऋतुओं में उगाई जा सकती है। पैदावार 12-15 टन प्रति हे हो जाती है।

हिसार उन्नत

वर्षा उपहार

यह प्रजाति चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा निकाली गई है। यह प्रजाति येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी है। पौधे मध्यम ऊँचाई 90-120 सेंमी तथा इंटरनोड पासपास होते हैं। पौधे में 2-3 शाखाएं प्रत्येक नोड से निकलती हैं। पत्तियों का रंग गहरा हरा, निचली पत्तियां चौड़ी व छोटे छोटे लोब्स वाली एवं ऊपरी पत्तियां बड़े लोब्स वाली होती है। वर्षा ऋतु में 40 दिनों में फूल निकलना शुरू हो जाते हैं व फल 7 दिनों बाद तोड़े जा सकते हैं। फल चौथी पांचवी गांठों से पैदा होते हैं। औसत पैदावार 9-10 टन प्रति हे. होती है। इसकी खेती ग्रीष्म ऋतु में भी कर सकते हैं।

यह प्रजाति चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा निकाली गई है। पौधे मध्यम ऊँचाई 90-120 सेंमी तथा इंटरनोड पासपास होते हैं। पौधे में 3-4 शाखाएं प्रत्येक नोड से निकलती हैं। पत्तियों का रंग हरा होता है। पहली तुड़ाई 46-47 दिनों बाद शुरू हो जाती है। औसत पैदावार 12-13 टन प्रति हे होती है। फल 15-16 सेंमी लम्बे हरे तथा आकर्षक होते हैं। यह प्रजाति वर्षा तथा गर्मियों दोनों समय में उगाई जाती है।

वी.आर.ओ.-6

इस किस्म को काशी प्रगति के नाम से भी जाना जाता है। यह प्रजाति भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी द्वारा 2003 में निकाली गई है।

यह प्रजाति येलोवेन मोजेक विषाणु रोग रोधी है। पौधे की औसत ऊँचाई वर्षा ऋतु में 175 सेंमी तथा गर्मी में 130 सेंमी होती है। इंटरनोड पासपास होते हैं। औसतन 38 वें दिन फूल निकलना शुरू हो

जाते हैं। गर्मी में इसकी औसत पैदावार 13.5 टन एवं बरसात में 18.0 टन प्रति हे. तक ली जा सकती है।

बीज की मात्रा व बुआई का तरीका

सिंचित अवस्था में 2.5 से 3 किग्रा तथा असिंचित दशा में 5-7 किग्रा प्रति हेक्टर की आवश्यकता होती है। संकर किस्मों के लिए 5 किग्रा. प्रति हेक्टर की बीजदर पर्याप्त होती है। भिंडी के बीज सीधे खेत में ही बोये जाते हैं। बीज बोने से पहले खेत को तैयार करने के लिये 2-3 बार जुलाई करनी चाहिए। वर्षाकालीन भिंडी के लिए कतार से कतार दूरी 40-45 सें.मी. एवं कतारों में पौधे की बीच 25-30 सें.मी. का अंतर रखना उचित रहता है। ग्रीष्मकालीन भिंडी की बुवाई कतारों में करनी चाहिए। कतार से कतार की दूरी 25-30 सें.मी. एवं कतार में पौधे से पौधे के मध्य दूरी 15-20 सें.मी. रखनी चाहिए। बीज की 2 से 3 सें.मी. गहरी बुवाई करनी चाहिए। बुवाई के पूर्व भिंडी के बीजों को 3 ग्राम

खाद और उर्वरक

भिंडी की फसल में अच्छा उत्पादन लेने हेतु प्रति हेक्टर क्षेत्र में लगभग 15-20 टन गोबर की खाद एवं नत्रजन, स्फुर एवं पोटेश की क्रमशः 80 किग्रा., 60 किग्रा. एवं 60 किग्रा. प्रति हेक्टर की दर से मिट्टी में देना चाहिए। नत्रजन की आधी मात्रा स्फुर एवं पोटेश की पूरी मात्रा बुवाई के पूर्व भूमि में देना चाहिए। नत्रजन की शेष मात्रा को दो भागों में 30-40 दिनों के अंतराल पर देना चाहिए।

निराई व गुड़ाई

नियमित निंदाई-गुड़ाई कर खेत को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए। बोने के 15-20 दिन बाद प्रथम निंदाई-गुड़ाई करना जरूरी रहता है। खरपतवार नियंत्रण हेतु रासायनिक कीटनाशकों का भी प्रयोग किया जा सकता है। खरपतवारनाशी फ्ल्यूक्लरेलिन के 1.0 किग्रा. सक्रिय तत्व मात्रा को प्रति हेक्टर की दर से पर्याप्त नम खेत में बीज बोने के पूर्व मिलाने से प्रभावी खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है।

सिंचाई

सिंचाई मार्च में 10-12 दिन, अप्रैल में 7-8 दिन और मई-जून में 4-5 दिन के अन्तर पर करें। बरसात में यदि

जैट्रोफा की खेती

कैसे करें रतनजोत की खेती

जैट्रोफा को आम भाषा में रतनजोत कहा जाता है। इसे विभिन्न स्थानों पर लगभग 200 नामों से जाना जाता है जैसे सफेद अरण्ड, जंगली अरण्ड, बाघ अरण्ड, चदजोत, जमालगोटा आदि। इसका वैज्ञानिक नाम फ्रजैट्रोफा करकसफ़ है। किसान जुलाई माह में जैट्रोफा के बीज सीधी बुआई द्वारा तैयार गड्ढों में कर जैट्रोफा के पौधे उगा सकते हैं। बोने के पहले बीज को 12 घंटों तक पानी में भिगोते हैं।

नर्सरी में तैयार पौधों को किसान अपने बंजर भूमि एवं खेतों के मेड़ों में लगा सकते हैं। नर्सरी में तैयार करने के लिए मार्च-अप्रैल महीने में 1 मी. × 10 मी. तथा 5 सें.मी. दूरी पर 2 सें.मी. की गहराई पर बोयें। इसे कटिंग द्वारा भी लगाया जा सकता है। कटिंग 2-3 माह बाद नर्सरी बेड से रोपाई वाले क्षेत्र में जुलाई-अगस्त में लगाते हैं। प्रभेद - आर जे-117 जीआईई नागपुर, बामुंडा तथा एसडीएयूटी-1 अधिक उपज देती है।

उपज- दिसम्बर-जनवरी में काले रंग के

फलों को तोड़ लेते हैं। तीसरे वर्ष किग्रा. बीज प्रति पौधा प्राप्त होता है। पौधे वर्ष में 1 किग्रा./पौधा तथा आगे प्रति वर्ष उपज बढ़ती है। स्वस्थ एवं मजबूत पौधे होने पर 3-4 किग्रा. प्रति पौधा की दर से उपज प्राप्त कर सकते हैं। प्रायः 6-10 रु./किग्रा. बीज की विक्रय दर से आय प्राप्त कर सकते हैं। पैराई कर तेल बेचने पर अधिक आय मिलती है।

जैट्रोफा की खेती-किसानों के लिए उपयोगी

व्यक्तिगत एवं सामुदायिक स्तर पर जैट्रोफा की खेती रोजगार के रूप में की जा सकती है। गाँवों की पथरीली एवं बंजर भूमि पर इसकी खेती कर के रोजगार एवं आय का सरल स्रोत माना जा सकता है। पौधों को जंगली पशु, पालतू पशु एवं फलों एवं बीजों को चिड़ियों से नुकसान नहीं होता है। अच्छी रख-रखाव होने से 30-40 वर्षों तक आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इसका उपयोग जैव इंधन, औषधि, जैविक खाद, रंग बनाने, भूमि सुधार, भूमि कटाव रोकने, खेत की मेड़ पर बाड़ के रूप में तथा ग्रामीण स्तर पर रोजगार बढ़ाने के लिए करते हैं।



परिचय
झारखंड की जलवायु तथा मिट्टी प्रक्षेत्रों में पथरीले, रेतीले, कम उपजाऊ तथा बंजर भूमि पर खेती की जा सकती है। दोमट

24 जिलों में वृहत जलवायु तथा समशीतोष्ण प्रक्षेत्रों में पथरीले, रेतीले, कम उपजाऊ तथा बंजर भूमि पर खेती की जा सकती है। दोमट

भूमि में खेती अच्छी होती है, परन्तु जल जमाव वाली जमीन खेती के लिए उपयुक्त नहीं है। अन्य प्रदेशों में जैसे मध्य प्रदेश, उड़ीसा,



छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान आदि के किसान भी जैट्रोफा की खेती करते हैं।

नेपाल में फिर कांपी धरती : पश्चिमी क्षेत्र में आया 4.1 तीव्रता का भूकंप, कई जिलों में महसूस किए गए झटके

काठमांडू, एंजेंसी। नेपाल के पश्चिमी हिस्से में बुधवार रात 4.1 तीव्रता का भूकंप आया। भूकंप के झटके बजुरा के साथ आसपास के कई जिलों में भी महसूस किए गए। हालांकि, अभी तक कहीं से किसी तरह के जान-माल के नुकसान की खबर सामने नहीं आई है। राष्ट्रीय भूकंप निगरानी एवं अनुसंधान केंद्र के मुताबिक, भूकंप बुधवार रात स्थानीय समयानुसार 9:37 बजे आया। भूकंप का केंद्र सुदूरपश्चिम प्रांत के बजुरा जिले की बुडीगंगा नगरपालिका-10 में जमीन के भीतर था। यह जगह राजधानी काठमांडू से करीब 750 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। भूकंप के झटके बजुरा के अलावा पड़ोसी बाजहांग, कालिकोट और अछाम जिलों में भी महसूस किए गए। अचानक धरती हिलने से इन इलाकों में लोगों को भूकंप का अहसास हुआ, हालांकि फिलहाल किसी बड़े नुकसान की सूचना नहीं है। नेपाल में सालभर छोटे-बड़े भूकंप आते रहते हैं। हिमालयी क्षेत्र में स्थित होने की वजह से यह देश दुनिया के सबसे सक्रिय भूकंपीय इलाकों में शामिल है। नेपाल का बड़ा हिस्सा भूकंपीय क्षेत्र 4 और 5 में आता है, जिसके चलते यहां भूकंप का खतरा हमेशा बना रहता है।

क्रिस्टा पाइक की नाकाम कोशिश के बाद अमेरिका में पहली फांसी

टेक्सस , एंजेंसी। टेक्सस में 46 वर्षीय जमाल हॉवर्ड को बुधवार शाम घातक इंजेक्शन देकर फांसी दी गई। वह इस साल अमेरिका में फांसी दिए जाने वाला 30वां व्यक्ति और टेनेसी में क्रिस्टा पाइक को घातक इंजेक्शन देने की नाकाम कोशिश के बाद देश में फांसी के दौरान पहला कैदी है। हंटसविले की जेल में पेंटोबाबिटल की घातक खुराक दिए जाने के बाद हॉवर्ड को रात 8 :03 बजे मृत घोषित किया गया। उसे 2000 में सिसबी शहर के एक स्टोर में डकैती के दौरान 42 वर्षीय कर्मचारी विकी स्वार്ടाउट की गोली मारकर हत्या करने का दोषी ठहराया गया था। घटना की निगरानी केमरे की फुटेज भी अदालत में सबूत के तौर पर पेश की गई थी। फांसी से पहले 70 किलोमीटर की यात्रा के दौरान हॉवर्ड अधिकारियों से बातचीत करता रहा और प्रक्रिया को लेकर सवाल पूछता रहा। अंतिम बयान में उसने पीड़िता के परिवार से माफ़ी मांगी।

दो करोड़ लोगों से लिया शुल्क, गूगल के खिलाफ ब्रिटेन में मुकदमा शुरू

लंदन, एंजेंसी। प्ले स्टोर पर पेड सुविधा, गेमिंग आइटम या इन-ऐप खसक्रीषण पर ऐप डेवलपर्स से 30% तक की फीस लेने के मामले में गूगल को ब्रिटेन में बड़ा झटका लगा है। लंदन की अदालत में इस मामले पर कंपनी के खिलाफ मुकदमा शुरू हो गया है। मुकदमे का मुख्य आरोप यह है कि गूगल के इस भारी कमीशन के कारण ऐप डेवलपर्स को अपने ऐस और सर्विसेज के दाम बढ़ाने पड़े। मामले की अनुवाई कर रही उपभोक्ता नीति विशेषज्ञ लिज कोल का कहना है कि ब्रिटेन के लगभग 2 करोड़ उपभोक्ताओं ने अनजाने में इन छिपे हुए शुल्कों के कारण ऐप्स और गेम्स के लिए ज्यादा कीमत चुकाई है। शिकायतकर्ता का दावा है कि गूगल ने मोबाइल बाजार में अपनी मजबूत स्थिति का गलत इस्तेमाल (एकाधिकार का दुरुपयोग) किया है, इसलिए ग्राहकों का पैसा वापस मिलना चाहिए। वहीं अपने बचाव में गूगल की पैरेंट कंपनी अल्फाबेट का कहना है कि एंड्रॉयड प्लेटफॉर्म उपभोक्ताओं को अन्य ऐप स्टोर इस्तेमाल करने की पूरी आजादी देता है।

काला सागर में सुरक्षा पर रूस-यूक्रेन युद्ध का असर

सोफ्रिया, एंजेंसी। बुल्गारिया की राष्ट्रपति इलियाना योतोवा ने कहा है कि रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण काला सागर क्षेत्र की सुरक्षा स्थिति में ‘महत्वपूर्ण गिरावट’ आई है। बुल्गारिया के तट के पास ड्रोन हमलों में दो वाणिज्यिक जहाजों को निशाना बनाए जाने के बाद सुरक्षा परिषद की आपात बैठक हुई। हमलों में टोगो-ध्वज वाला जहाज अल्फा वतन गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त होकर डूब गया, जबकि पलाऊ-ध्वज वाला एबल आग लगने के बाद क्षतिग्रस्त हुआ। एबल के सभी 18 चालक दल के सदस्यों को बचा लिया गया, लेकिन अल्फा वतन के चालक दल की तलाश बुधवार को रोक दी गई और किसी जीवित व्यक्ति या शव का पता नहीं चल सका।

रूसी लैब में कर्मचारी की मौत पर डब्ल्यूएचओ ने मांगी जानकारी, प्लेग की आशंका, खतरे का अभी पता नहीं

जिनेवा, एंजेंसी। विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक डॉ. टेड्रोस ऐडेरर्नोम गैबरेयेसस ने रूस के एक प्लेग संबंधी लैब में एक कर्मचारी की मौत पर सरकार से और जानकारी मांगी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के पास अभी तक घटना की पूरी जानकारी नहीं है, जिससे वह खतरे का आकलन करने में असमर्थ है। एक मीडिया ब्रीफिंग में बुधवार को टेड्रोस ने कहा कि शुरुआती मीडिया रिपोर्ट्स में इरकुत्स्क एंटीप्लेग रिसर्च इंस्टीट्यूट में लैब में अचानक से हुए न्यूमोनिक प्लेग के संदिग्ध मामले का सुझाव दिया गया था, ‘फिख्ले शुक्रवार 2 अक्टूबर को रशियन फेडरेशन में इरकुत्स्क एंटीप्लेग

रिसर्च इंस्टीट्यूट में एक लैब वर्कर में न्यूमोनिक प्लेग के संदिग्ध मामले की पहली मीडिया रिपोर्ट सामने आई। उन्होंने आगे कहा, ‘लैब वर्कर की गंभीर निमोनिया के कारण अस्पताल में भर्ती होने के बाद मौत हो गई, शुरुआती मीडिया रिपोर्ट्स में लैब में अचानक से हुए न्यूमोनिक प्लेग के संदिग्ध मामले का सुझाव दिया गया है। उन्होंने कहा, ‘शनिवार को डब्ल्यूएचओ ने इंटरनेशनल हेल्थ रेगुलेशंस के मुताबिक रूसी

ड्रोन-मिसाइल हमले में 36 घायल; जवाब में यमन के 80 ठिकानों पर सऊदी की एयरस्ट्राइक

रियाद, एंजेंसी। सऊदी अरब के दो एयरपोर्ट्स पर ह्ती विद्रोहियों ने ड्रोन और मिसाइल से हमले किए। इसमें 3 लोगों की मौत हो गई है। साथ ही 36 लोग घायल हुए हैं। सऊदी अरब की जनरल अथॉरिटी ऑफ सिविल एविएशन ने बुधवार को यह जानकारी दी। आभा इंटरनेशनल एयरपोर्ट और रियाद के किंग खालिद इंटरनेशनल एयरपोर्ट को 6 और 7 अक्टूबर को निशाना बनाया गया। ह्ती विद्रोहियों ने दोनों हमलों की जिम्मेदारी ली है। वहीं, यमन में सऊदी के नेतृत्व वाले गठबंधन ने कहा कि उसने ह्तीयों के 80 से ज्यादा सैन्य ठिकानों पर जवाबी कार्रवाई की है।

विदेशी नागरिकों ने हमले में जान गवाई : आभा एयरपोर्ट पर हमले में मोरक्को और अल्जीरिया की दो महिला नागरिकों की मौत हुई। साथ ही यहां 28 लोग घायल हुए, जिनमें सऊदी, बांग्लादेशी और फिलीपींस के नागरिक शामिल हैं। वहीं, किंग खालिद इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर एक सूडानी नागरिक की मौत हुई। यहां 8 लोग घायल हुए, जिनमें 5 सऊदी नागरिक, 2 मिस्र के निवासी और एक पाकिस्तानी निवासी शामिल हैं।

जीएसीए ने बताया कि सभी घायलों को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया गया। साथ ही अधिकारी सुविधाओं की सुरक्षा की जांच कर रहे हैं और यात्रियों की सुरक्षा के लिए जरूरी कदम उठा रहे हैं।

ह्तीयों ने अरामको रिफाइनरी पर हमले का भी दावा किया : इससे पहले ह्ती सैन्य प्रवक्ता याह्या



सरी ने सऊदी अरब में कई जगहों पर मिसाइल और ड्रोन हमले करने की जिम्मेदारी ली थी। इसमें रबीघ में स्थित दुनिया की सबसे बड़ी तेल रिफाइनरी अरामको पर हमला भी शामिल है। सरी ने टेलीग्राम पर जारी बयान में कहा कि संगठन ने बड़ी संख्या में बैलिस्टिक और क्रूज मिसाइलों के साथ ड्रोन का इस्तेमाल करते हुए तीन बड़े सैन्य अभियान चलाए। पहले हमले में रियाद के किंग खालिद इंटरनेशनल एयरपोर्ट को निशाना बनाया गया। सरी ने दावा किया कि हमला सीधे लक्ष्य पर हुआ और इससे हवाई यातायात प्रभावित हुआ। दूसरे हमले में रबीघ स्थित अरामको की तेल रिफाइनरी को निशाना बनाया गया। सरी ने दावा किया कि हमले के बाद वहां आग लग गई। तीसरे हमले में ह्तीयों ने आभा एयरपोर्ट, खमिस मुशैत एयरबेस और असीर क्षेत्र के अकिफा कैंप को निशाना बनाने का दावा किया। इसके अलावा नजरा और जिजान में अन्य

महत्वपूर्ण ठिकानों पर भी हमले किए जाने की बात कही गई। सरी ने दावा किया कि ये हमले यमन पर सऊदी अरब के हमलों के जवाब में किए गए। उनके मुताबिक, इससे पहले के 24 घंटों में सऊदी अरब ने यमन पर 60 हवाई और मिसाइल हमले किए थे।

सऊदी ने यमन में मिसाइल लॉन्च करने वाला ठिकाना नष्ट किया : इस बीच, यमन में सऊदी अरब के नेतृत्व वाले सैन्य गठबंधन ने दावा किया कि उसने रियाद पर हमले के लिए इस्तेमाल किए गए एक बैलिस्टिक मिसाइल लॉन्च प्लेटफॉर्म को नष्ट कर दिया है। गठबंधन के प्रवक्ता कर्नल तुकी अल-मालिकी ने कहा कि यह कार्रवाई यमन की राजधानी सना में की गई। उनके मुताबिक, वहां सऊदी अरब पर एक और हमले की तैयारी चल रही थी और हमला जल्द किया जा सकता था। यमन में ह्तीयों के खिलाफ सैन्य अभियान जारी यमन सरकार ह्ती

टेक्सस में ट्रंप की रैली में प्रदर्शनकारियों ने डाला खलल

टेक्सस , एंजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार रात टेक्सस के सैन एंटोनियो में रिपब्लिकन सीनेट उम्मीदवार केन पैक्सटन के समर्थन में रैली की। ट्रंप का लक्ष्य ऐसे समय में टेक्सस के मतदाताओं को रिपब्लिकन पार्टी के पक्ष में लामबंद करना है, जब राज्य में डेमोक्रेट्स की चुनौती बढ़ रही है। रैली के दौरान कम से कम एक दर्जन प्रदर्शनकारियों ने ट्रंप के भाषण को बार-बार बाधित किया और कुछ को पुलिस ने बाहर निकाल दिया।

एक प्रदर्शनकारी के विरोध के बाद ट्रंप कुछ देर के लिए माइक्रोफोन से दूर चले गए। उन्होंने ईरान युद्ध को लेकर अपनी हालिया टिप्पणी पर भी सफाई दी, जिसमें उन्होंने कहा था कि अगर ईरान किसी अमेरिकी शहर पर हमला करता है तो अमेरिका इसकी अनुमति नहीं देगा। ट्रंप ने कहा, ‘हम अपने शहरों की रक्षा करते हैं। हम अपने देश की रक्षा करते हैं।

टेक्सस लंबे समय से रिपब्लिकन पार्टी का मजबूत गढ़ रहा है, लेकिन इस बार राष्ट्रपति को कम अप्रुवल रेटिंग, ईरान युद्ध और बढ़ती गैस कीमतों ने रिपब्लिकन नेताओं की चिंता बढ़ा दी है। ट्रंप एक महीने से भी कम समय में तीसरी बार टेक्सस पहुंचे हैं और पार्टी ने राज्य में चुनावों के लिए अब तक 30 करोड़ डॉलर से अधिक खर्च किए हैं। रिपब्लिकन गवर्नर ग्रेग एबॉट ने रैली में हिस्सा नहीं लिया, जिस पर डेमोक्रेट्स ने निशाना साधा। वहीं, सीनेट की दौड़ में डेमोक्रेटिक उम्मीदवार जेम्स तालारिको की मजबूत फंडेजिंग और पैक्सटन से जुड़े विवादों ने मुकाबले को कड़ा बना दिया है। ट्रंप ने पैक्सटन को ‘शायद अमेरिका के सबसे महान अर्टोर्नी’ बताया, जिस पर उनके समर्थन में जोरदार अपील की, जबकि उन्होंने अपना अधिकांश भाषण तालारिको पर हमले करने में खर्च किया।

सीक्रेट मिशन का झांसा: सीआईए के पूर्व अफसर ने हड़पी सोने की सिल्लियां और 1843 करोड़

अलेक्जेंड्रिया, एंजेंसी। अमेरिका की सबसे ताकतवर और खुफिया जासूसी एंजेंसी ‘सीआईए’ के भीतर से एक ऐसा सनसनीखेज फर्जीवाड़ा सामने आया है, जिसने सुरक्षा और ऑडिटिंग व्यवस्था की ध्वजियां उड़ा दी हैं। एंजेंसी के एक पूर्व वरिष्ठ अधिकारी ने अत्यंत गोपनीय सरकारी मिशन का झूठा ताना-बाना बुनकर सरकार के खजाने से सैकड़ों सोने की सिल्लियां और अरबों रुपए के फंड अपने निजी ऐशों-आराम के लिए हड़प लिए। वजीरवार की संघीय अदालत में मंगलवार को 49 वर्षीय पूर्व सीआईए अधिकारी डेविड जे. रश ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। अदालती दस्तावेजों के अनुसार, रश



ने अपने पद और सरकारी अधिकार का दुरुपयोग करते हुए 40 मिलियन डॉलर (करीब 380 करोड़ रुपये) से अधिक की सोने की सिल्लियां और फ्लोरिडा में करोड़ों की लज्जरी

संपत्तियां अवैध रूप से हासिल की थीं। अमेरिकी न्याय विभाग (डोजे) के अनुसार, रश के इस सुनिश्चित फर्जीवाड़े से अमेरिकी संघीय सरकार को कुल मिलाकर लगभग 194 मिलियन डॉलर (करीब 1,843 करोड़ रुपये) का भारी नुकसान हुआ है। रश ने वित्तीय धोखाधड़ी का आरोप स्वीकार कर लिया है, जिसके तहत उसे अधिकतम 20 साल की जेल की सजा हो सकती है। जिला जज माइकल नचमनॉफ आगामी 28 जनवरी 2027 को रश की सजा ऐलान करेंगे। जांच में सामने आया कि रश ने सरकारी पैसे और सोने पर हाथ साफ करने के लिए एक काल्पनिक जासूसी ऑपरेशन की

पटकथा तैयार की थी। रश ने सहयोगियों और सरकारी ठेकेदारों से झूठ बोला कि वह उच्चाधिकारियों द्वारा अधिकृत एक अत्यंत संवेदनशील राष्ट्रीय सुरक्षा गतिविधि पर काम कर रहा है। इसी बहाने उसने संघीय खजाने से सोने की सिल्लियां जारी करवा लीं। इसके बाद डेविड जे. रश ने 145 मिलियन डॉलर (करीब 1,377.5 करोड़ रुपये) सरकारी रकम को अपनी एक शेल कंपनी में ट्रांसफर कर लिया। इस पैसे से उसने पाम बीच और होब साउंड (साउथ फ्लोरिडा) में 4 आलीशान संपत्तियां खरीदीं, जिन्हें वह बाद में ऊंचे दामों पर बेचकर व्यक्तिगत मुनाफा कमाना चाहता था।

पटकथा तैयार की थी। रश ने सहयोगियों और सरकारी ठेकेदारों से झूठ बोला कि वह उच्चाधिकारियों द्वारा अधिकृत एक अत्यंत संवेदनशील राष्ट्रीय सुरक्षा गतिविधि पर काम कर रहा है। इसी बहाने उसने संघीय खजाने से सोने की सिल्लियां जारी करवा लीं। इसके बाद डेविड जे. रश ने 145 मिलियन डॉलर (करीब 1,377.5 करोड़ रुपये) सरकारी रकम को अपनी एक शेल कंपनी में ट्रांसफर कर लिया। इस पैसे से उसने पाम बीच और होब साउंड (साउथ फ्लोरिडा) में 4 आलीशान संपत्तियां खरीदीं, जिन्हें वह बाद में ऊंचे दामों पर बेचकर व्यक्तिगत मुनाफा कमाना चाहता था।

वाशिंगटन, एंजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर नोबेल शांति पुरस्कार पर अपना दावा ठेक दिया है। उनका कहना है कि उन्होंने दुनिया में आठ युद्ध खत्म कराए हैं और ऐसे काम किए हैं, जो उनसे पहले किसी ने नहीं किए। ट्रंप ने एक सफाई कि अगर इतने बड़े काम करने के बाद भी उन्हें यह सम्मान नहीं मिलता, तो इससे नोबेल पुरस्कार देने वाली समिति की साख को नुकसान पहुंचेगा। उन्होंने ये बातें बुधवार दोपहर व्हाइट हाउस के ओवल ऑफिस में पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहीं। नोबेल शांति पुरस्कार की घोषणा शुक्रवार को नॉर्वे की नोबेल समिति करने वाली है।

मैंने आठ युद्ध खत्म कराए : ट्रंप ने पत्रकारों से बातचीत में अपने कामों का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने ऐसे कदम उठाए हैं, जिनकी मिसाल पहले देखने को नहीं मिली। उन्होंने कहा, ‘मैंने वो काम किए हैं, जो किसी और ने कभी नहीं किए। मैं अपनी तारीफ नहीं कर रहा, बल्कि सिर्फ तथ्य बता रहा हूँ। शायद ही किसी राष्ट्रपति ने कभी कोई युद्ध खत्म कराया हो। मैंने आठ युद्ध खत्म कराए हैं।’

सम्मान नहीं मिला तो नोबेल समिति पर उठेगे सवाल : अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि नोबेल समिति की छवि ऐसी रही है कि वह शायद उनके जैसे व्यक्ति को यह पुरस्कार नहीं देना चाहती। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि पुरस्कार मिले या न मिले, वह पहले ही बहुत कुछ कर चुके हैं। ट्रंप के मुताबिक, जब कोई नेता आठ युद्ध



रकवाने का दावा करता है, तो उसके योगदान को नजरअंदाज करना समिति के लिए बड़ा नुकसान साबित हो सकता है। उन्होंने कहा कि वह यह बात किसी नाराजगी या तंज के तौर पर नहीं, बल्कि अपने कामों के आधार पर कह रहे हैं।

आठ महीने से जारी युद्ध पर भी ट्रंप की नजर : ट्रंप ने संकेत दिया कि उनकी युद्ध रकवाने की कोशिश अभी खत्म नहीं हुई है और वह एक और संघर्ष को सुलझाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। माना जा रहा है कि उनका इशारा अमेरिका और ईरान के बीच जारी युद्ध की ओर था, जो अब आठवें महीने में पहुंच चुका है। ट्रंप ने इस संभावित पहल को लेकर विस्तार से कुछ नहीं बताया, लेकिन उनके बयान से साफ है कि वह अपने शांति प्रयासों को नोबेल पुरस्कार के दावे का अहम आधार बना रहे हैं। ट्रंप ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को 2009 में मिले नोबेल शांति पुरस्कार का जिक्र करते हुए कहा कि वह खुद इस सम्मान के ज्यादा रकदार हैं। उन्होंने ओबामा पर निशाना साधते हुए कहा कि उन्हें आज तक समझ नहीं आया कि यह पुरस्कार किस वजह से मिला था। ट्रंप के मुताबिक, ओबामा को राष्ट्रपति चुने जाने के तुरंत बाद ही यह सम्मान दे दिया गया था।

एफबीआई की सतर्कता से टली बड़ी मुसीबत, मॉल ऑफ अमेरिका पर हमले की साजिश नाकाम

न्यूयार्क, एंजेंसी। अमेरिका की संघीय जांच एंजेंसी एफबीआई ने बुधवार को दावा किया कि उसने मॉल ऑफ अमेरिका पर हमले की साजिश को नाकाम कर दिया। अधिकारियों के अनुसार, एंजेंसी के अधिकारियों ने बताया कि एफबीआई के एजेंट ही आईएसआईएस के आतंकी बनकर आरोपी किशोर के संपर्क में थे। एजेंट्स ने ही किशोर के कहने पर हमले की योजना बना रहे किशोर को अर्सॉल्ट राइफल मुहैया कराई थी। हालांकि हमले को अंजाम देने से पहले ही उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

एफबीआई ने क्या बताया: अधिकारियों ने बताया कि 18 वर्षीय युवक करीब दो साल से जांच के दायरे में था और इस दौरान वह एफबीआई के एक गोपनीय मुखबिर के साथ लगातार संपर्क में था। बाद में एजेंटों ने उसे राइफल और गोला-बारूद बेचने का प्रस्ताव दिया। अमेरिकी अर्टोर्नी डेनियल रोसेन ने एफबीआई की जांच की सराहना करते हुए कहा, ‘यह एक कट्टरपंथी विचारों वाला युवक

था, जिस पर नजर रखने की जरूरत थी। उन्होंने कहा कि एजेंटों ने ‘खतरे का पता लगाने और उसे रोकने में’ सफलता हासिल की, इससे पहले कि आरोपी अपनी उस मंशा को अंजाम दे पाता, जिसके तहत, उसके अपने शब्दों में, वह 30 से 60 लोगों की हत्या करना चाहता था।’ शिकायत के अनुसार, 18 वर्षीय शोखदून अब्दुल्लाही मोहम्मद को मंगलवार को मॉल ऑफ अमेरिका से कई मील उत्तर-पश्चिम में रिचफील्ड के एक सार्वजनिक पार्क से गिरफ्तार किया गया। उसने आईएसआईएस के सदस्य के रूप में खुद को पेश कर रहे एफबीआई के एक अंडरकवर एजेंट को एके-47 राइफल और 200 राउंड गोлияं खरीदने के लिए 600 अमेरिकी डॉलर दिए थे।

शिकायत में कहा गया है कि एफबीआई के एक गोपनीय सूत्र के साथ टेक्स्ट संदेशों में मोहम्मद ने गैर-मुस्लिम लोगों की हत्या के लिए हमला करने की अपनी मंशा बार-बार जाहिर की थी।

घाना के मंत्रिमंडल ने ब्रिक्स में शामिल होने के प्रस्ताव को मंजूरी दी

अक्रा (घाना), एंजेंसी। घाना के विदेश मंत्री सैम ओकुदजेतो अबलाकवा ने बुधवार को कहा कि मंत्रिमंडल ने ब्रिक्स का सदस्य बनने के निर्णय को मंजूरी दे दी है और अब यह अफ्रीकी देश इस समूह में शामिल होने के लिए औपचारिक रूप से आवेदन करेगा। वहीं, विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि नई दिल्ली, घाना की इस आकांक्षा के प्रति ‘‘काफी सहानुभूतिपूर्ण और सहयोगी’’ रहा है। जयशंकर अफ्रीका के तीन देशों के दौरे के पहले चरण में मंगलवार को घाना पहुंचे। उनके इस दौरे में कोट डी आइवर और इथियोपिया भी शामिल हैं। घाना द्वारा ब्रिक्स को लेकर यह घोषणा ऐसे समय की गई, जब जयशंकर ने अपनी यात्रा के दौरान वहां के नेतृत्व के साथ बैठक की है। जयशंकर और अबलाकवा ने बुधवार को अपनी बैठक के बाद संयुक्त रूप से मीडिया को संबोधित किया। अबलाकवा ने कहा कि घाना ‘‘भारत, ब्राजील और चीन जैसे पुराने साझेदारों’’ के साथ भी संबंध



मजबूत करना चाहता है, जिनके साथ इस पश्चिम अफ्रीकी देश के पहले से ही व्यापक व्यापार और निवेश संबंध हैं। सैम ओकुदजेतो अबलाकवा ने कहा कि ब्रिक्स की सदस्यता से घाना को अपनी अर्थव्यवस्था को बढ़ाने, नौकरियां सृजित करने, औद्योगीकरण करने और ‘संसाधन संप्रभुता’ के एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए ज्यादा विकल्प मिलेंगे। उन्होंने कहा कि घाना अब सदस्यता के लिए औपचारिक रूप से आवेदन करने और मौजूदा ब्रिक्स सदस्यों को समर्थन हासिल करने की दिशा में कदम उठाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि सदस्यता मिलने के लिए अंततः

समूह को मंजूरी का जरूरत हांगा। जयशंकर ने कहा कि दोनों देशों ने कृषि अनुसंधान और प्रशिक्षण तथा जैव-विविधता पर समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। अफ्रीका हमारे दिलों में बसता है, हम आपाणी पीढ़ियों के लिए साझेदारी करेंगे: जयशंकर विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भारत और अफ्रीका को दीर्घकालिक साझेदार बताते हुए कहा कि आपूर्ति श्रृंखला में लचीलापन, रणनीतिक स्वायत्तता और ‘ग्लोबल साउथ’ में सहयोग जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए दोनों पक्षों को मिलकर काम करना चाहिए। जयशंकर ने मंगलवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा,

ट्रंप की नोबेल शांति पुरस्कार पर फिर दावेदारी: बोले- आठ युद्ध ठकवाए, सम्मान नहीं मिला तो समिति की होगी बदनामी

वाशिंगटन, एंजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर नोबेल शांति पुरस्कार पर अपना दावा ठेक दिया है। उनका कहना है कि उन्होंने दुनिया में आठ युद्ध खत्म कराए हैं और ऐसे काम किए हैं, जो उनसे पहले किसी ने नहीं किए। ट्रंप ने एक सफाई कि अगर इतने बड़े काम करने के बाद भी उन्हें यह सम्मान नहीं मिलता, तो इससे नोबेल पुरस्कार देने वाली समिति की साख को नुकसान पहुंचेगा। उन्होंने ये बातें बुधवार दोपहर व्हाइट हाउस के ओवल ऑफिस में पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहीं। नोबेल शांति पुरस्कार की घोषणा शुक्रवार को नॉर्वे की नोबेल समिति करने वाली है।

मैंने आठ युद्ध खत्म कराए : ट्रंप ने पत्रकारों से बातचीत में अपने कामों का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने ऐसे कदम उठाए हैं, जिनकी मिसाल पहले देखने को नहीं मिली। उन्होंने कहा, ‘मैंने वो काम किए हैं, जो किसी और ने कभी नहीं किए। मैं अपनी तारीफ नहीं कर रहा, बल्कि सिर्फ तथ्य बता रहा हूँ। शायद ही किसी राष्ट्रपति ने कभी कोई युद्ध खत्म कराया हो। मैंने आठ युद्ध खत्म कराए हैं।’

सम्मान नहीं मिला तो नोबेल समिति पर उठेगे सवाल : अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि नोबेल समिति की छवि ऐसी रही है कि वह शायद उनके जैसे व्यक्ति को यह पुरस्कार नहीं देना चाहती। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि पुरस्कार मिले या न मिले, वह पहले ही बहुत कुछ कर चुके हैं। ट्रंप के मुताबिक, जब कोई नेता आठ युद्ध

कच्छ में भीषण सड़क हादसा : सोलर पार्क में ट्रेलर से टकराई बोलेरो, 7 मजदूरों की दर्दनाक मौत

कच्छ (एजेंसी)। गुजरात के कच्छ जिले में देर रात हुए भीषण सड़क हादसे में सात मजदूरों की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि कई अन्य गंभीर रूप से घायल हुए हैं। यह दुर्घटना खावड़ा सोलर पार्क जाने वाले मार्ग पर एक बोलेरो और ट्रेलर के बीच जोरदार टक्कर के कारण हुई। मृतकों में सभी मजदूर हैं, जो बोलेरो में सवार होकर काम पर जा रहे थे या लौट रहे थे। इस भयावह घटना ने पूरे क्षेत्र में शोक का माहौल पैदा कर दिया है। जानकारों के अनुसार, खावड़ा पुलिस चेकपोस्ट से सोलर पार्क की ओर आने वाले रास्ते पर यह हादसा इतना दर्दनाक था कि बोलेरो में सवार 7 लोगों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। अनुमान के मुताबिक, बोलेरो में पंद्रह से अधिक कामगार सवार थे। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कानन पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। हादसे के बाद घटनास्थल पर वीख-पुकार मच गई। लोगों और पुलिस की मदद से घायलों को तुरंत नजदीकी अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उनका इलाज जारी है। वहीं, मृतकों के शवों को खावड़ा लाने के बाद पोस्टमार्टम के लिए भुज रेफर किया गया। बताया जा रहा है कि खावड़ा सोलर पार्क क्षेत्र में इस प्रकार का यह पहला बड़ा और दर्दनाक हादसा है। देर रात हुई भीषण दुर्घटना के बाद घटनास्थल पर लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। पुलिस ने मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू कर दी है, ताकि हादसे के कारणों का पता लगाया जा सके।

केरल बीजेपी अध्यक्ष की चेतावनी, विधानसभा सत्र में वैधता का मुद्दा उठाएगी पार्टी

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी की केरलम इकाई के अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर ने शुक्रवार को कहा कि एसआईआर को लेकर कांग्रेस नेताओं द्वारा चुनावों की वैधता पर सवाल उठाए जाने के बीच उनकी पार्टी विधानसभा के आगामी सत्र में सदन की वैधता का मुद्दा उठाएगी। कांग्रेस समेत कई दल मतदाता सुविधों के गहन पुनरीक्षण में अनियमितताओं का आरोप लगाते हुए मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। चंद्रशेखर ने एक्स पर कहा कि बीजेपी 12 अक्टूबर से शुरू होने वाले विधानसभा सत्र में यह मुद्दा उठाएगी। चंद्रशेखर ने कहा कि इस विधानसभा की वैधता क्या है? क्या यह विधानसभा वैध है या अवैध?’’ केरलम में एसआईआर के बाद इस साल अप्रैल में हुए विधानसभा चुनाव में 140 सदस्यीय सदन में बीजेपी के तीन विधायक जीते थे। उन्होंने कहा कि विधानसभा में सबसे पहले इस बात पर चर्चा होनी चाहिए कि क्या हम सभी अवैध रूप से चुने हुए हैं। यह मुद्दा मुझसे वी. मुरलीधरन, गोपकुमार और अन्य 137 विधायकों से जुड़ा है। चंद्रशेखर ने सीएम वीडी सतीशनन से सदन में इस मुद्दे पर स्थिति स्पष्ट करने की मांग की। बीजेपी नेता ने कहा कि अगर यह अवैध है तो उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए।

इंफाल में चौकी पर हमला, आरएफ का एक हेड कांस्टेबल घायल

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के इंफाल में केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल की एक चौकी पर अज्ञात व्यक्ति द्वारा ग्रेनेड फेंके जाने से आरएफ का एक हेड कांस्टेबल घायल हो गया। अधिकारियों ने शुक्रवार को इसकी जानकारी दी। यह घटना गुरुवार रात की बताई जा रही है। यूपी के रहने वाले हेड कांस्टेबल धनंजय राय इंफाल पूर्वी जिले में पोरोयपत थाना क्षेत्र के न्यू लॉबुलोंग स्थित आरएफ चौकी के प्रवेश द्वार पर हुए विस्फोट में घायल हो गए। उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया जहां उपचार बाद में उन्हें छुट्टी दे दी गई। अधिकारियों ने बताया कि पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और इलाके में तलाशी अभियान चलाया, लेकिन अब तक किसी को गिरफ्तार नहीं हुई है। मामले की जांच जारी है। किसी भी उपद्रवी साधन ने अब तक इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है।

एंबुलेंस में जोरदार धमाका, 40 फीट दूर जा गिरी छत ; मरीज की मौत, दो घायल

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा के मयूरभंज जिले में उल्ला उपमंडलीय अस्पताल के पास एक एंबुलेंस में आग लगने के बाद जोरदार धमाका हो गया। हादसे में एंबुलेंस से भुवनेश्वर ले जाया जा रहे मरीज की मौत हो गई, जबकि दो अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। धमाका इतना तेज था कि एंबुलेंस की छत उछलकर करीब 40 फीट दूर जा गिरी। घटना के बाद अस्पताल परिसर और आसपास के इलाके में अफरा-तफरी मच गई। मृतक की पहचान कुंडाबाई इलाके के निवासी सुयश कुमार बारिक के रूप में हुई है। वह ब्लड इन्फेक्शन जैसी गंभीर समस्या से पीड़ित थे। बेहतर इलाज के लिए उन्हें भुवनेश्वर के एक अस्पताल में ले जाया जा रहा था। इसके लिए परिजनों ने एक निजी ऑपरेटर की एंबुलेंस किराये पर ली थी। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, रास्ते में उल्ला उपमंडलीय अस्पताल के पास मरीज को ऑक्सीजन देने के लिए एंबुलेंस चालक ने सिलेंडर का वाल खोला। इसी दौरान क्षणों में अचानक आग लग गई और कुछ ही क्षणों में जोरदार धमाका हो गया। धमाके के कारण एंबुलेंस की छत उछलकर लगभग 40 फीट दूर जा गिरी। इसके बाद आग ने पूरी एंबुलेंस को अपनी चपेट में ले लिया। एंबुलेंस में आम लगते ही मौके पर मौजूद लोगों में दहशत फैल गई।

योगी सरकार ने महिलाओं को दिया मुफ्त रसोई गैस सिलेंडर का तोहफा

लखनऊ,, एजेंसी।

उत्तरप्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने दीपावली से पहले प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों को राहत दे दी है। मुख्यमंत्री योगी की अध्यक्षता में हुई मंत्रिपरिषद की बैठक में वित्तीय वर्ष 2026-27 के दौरान होली और दीपावली पर एक-एक मुफ्त रसोई गैस सिलेंडर भरवाने की योजना जारी रखने के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई। इस योजना पर राज्य सरकार 2,142.78 करोड़ रुपये खर्च करेगी।

कैबिनेट बैठक के बाद खाद्य एवं रसद मंत्री मनोज पांडेय ने बताया कि योजना के तहत पहला मुफ्त सिलेंडर अक्टूबर से दिसंबर 2026 के बीच दीपावली के मौके पर और दूसरा जनवरी से मार्च 2027 के बीच होली पर मिलेगा। इसका लाभ उन्हीं उज्ज्वला लाभार्थियों को मिलेगा, इनके बैंक खाते आधार से जुड़े होंग और आधार प्रमाणिकरण पूरा होगा। योगी सरकार का कहना है कि इस



योजना से गरीब परिवारों को रसोई गैस उपलब्ध करने और स्वच्छ ईंधन के इस्तेमाल को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। बैठक में जेवर हवाई अड्डे का नाम 'नरेंद्र मोदी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा नोएडा-जेवर' रखने के प्रस्ताव को भी मंजूरी दी गई। मुख्यमंत्री योगी ने इसकी जानकारी दी।

मुख्यमंत्री योगी ने सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का उल्लेख कर कहा कि प्रदेश में 65 लाख से अधिक गरीब परिवारों को प्रधानमंत्री आवास उपलब्ध कराए हैं। करीब 15 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन दिया रहा है। जल जीवन मिशन के तहत 2.46 करोड़ ग्रामीण परिवारों को नल

कनेक्शन मिले हैं, जबकि उज्ज्वला योजना के अंतर्गत 1.86 करोड़ मुफ्त गैस कनेक्शन दिए हैं। सीएम योगी ने बताया कि प्रदेश में 6 करोड़ से अधिक आयुष्मान कार्ड जारी किए हैं। इनके माध्यम से 9.90 करोड़ से ज्यादा लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा मिली है। योगी सरकार के अनुसार, गंभीर बीमारियों से पीड़ित 1.09 करोड़ लोगों के उपचार पर 18,798 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। मुख्यमंत्री योगी ने रोजगार और महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में उपलब्धियां गिनाकर कहा कि प्रदेश में 9.50 लाख से अधिक सरकारी नौकरियां दी गई हैं और निजी क्षेत्र में 65 लाख नियुक्तियां हुई हैं। उन्होंने बताया कि 10 लाख स्वयं सहायता समूहों से एक करोड़ से अधिक महिलाएं जुड़ी हैं। सरकार का दावा है कि इन योजनाओं से गरीब परिवारों, महिलाओं और युवाओं को लाभ पहुंचा है।

नाना की मौत पर सरस्पेंस, पुलिस ने दर्ज किया अननचेचुरल डेथ का मामला

पणजी (एजेंसी)। अभिनेता नाना पाटेकर के निधन के बाद पुलिस ने अननचेचुरल डेथ का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। उन्हें अस्पताल लाए जाने से पहले ही उनकी मौत हो चुकी थी, जिसके चलते कानूनी प्रक्रिया के तहत यह कदम उठाया गया है। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 194 के तहत मामला दर्ज किया है। डॉक्टरों के अनुसार, जब किसी व्यक्ति को अस्पताल में मृत अवस्था में लाया जाता है, तो इसे मेडिको-लीगल केस माना जाता है और पुलिस को सूचित करना अनिवार्य होता है। डॉक्टरों ने शुरुआती तौर पर नाना पाटेकर की मौत की वजह कार्डियक अरेस्ट बताई है। बताया जा रहा है कि उन्हें पहले से दिल से जुड़ी बीमारियां थीं और वे नियमित दवाइयां ले रहे थे। पुलिस मामले की गहराई से जांच कर रही है और परिवार के सदस्यों सहित मामले से जुड़े अन्य लोगों के बयान भी दर्ज किए जाएंगे। जांच में अगर मौत प्राकृतिक कारणों से पाई जाती है, तो मामला बंद कर दिया जाएगा। वहीं, अगर किसी तरह के गलत होने का कोई भी संकेत मिलता है, तो पुलिस आगे की कार्रवाई करेगी। बता दें कि नाना पाटेकर का 8 अक्टूबर को 75 साल की उम्र में निधन हो गया था। उनका अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ पुणे के डोंजे गांव में स्थित उनके फार्माहाउस नानाची वाड़ी के आसपास किया गया, जहां उनकी पत्नी नीलकांति पाटेकर और बेटे महेश्वर पाटेकर ने उन्हें मुखाग्नि दी।



कैप्टन रिमंत मखर को इजरायल देगा वीरता पुरस्कार



-पलाईटुर्बई पलाइट को हाईजैक होने और कैश करने से बचाया था

नई दिल्ली , एजेंसी।

30 सितंबर को दुबई से तेल अवीव जा रही फलाईटुर्बई की फ्लाइट को हाईजैक होने से बचाने वाले कैप्टन रिमंत मखर को इजरायल सम्मानित करेगा। इजरायली राष्ट्रपति आइजैक हर्जोग ने गुरुवार को इस घटना से जुड़े नायकों को सम्मानित किया। उन्होंने येरुशलम में छह इजरायली नागरिकों- ताली मानेस, जिस्का मानेस, यानिव हायुन, डॉ. शोला मुसयेव, आसाफ राजुआन और ओर परिटदिलोव को राष्ट्रपति नागरिक वीरता पदक प्रदान किया। इन लोगों ने हमलावर को रोकने में अहम भूमिका निभाई थी। हर्जोग ने उसी मौके पर भारतीय पायलट कैप्टन रिमंत मखर को भी यही पुरस्कार देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि

मखर की साहस, बहादुरी और पेशेवर रवैये ने इस बड़ी आपदा को टाल दिया। मखर के स्वस्थ होने के बाद उन्हें यह सम्मान दिया जाएगा। हर्जोग ने मखर के जल्द स्वस्थ होने की कामना भी की। कैप्टन रिमंत मखर फिलहाल अन्धवी के एक अस्पताल में इलाज करा रहे हैं। वे रिकवरी कर रहे हैं। भारतीय विदेश मंत्रालय ने भी उनकी हालत में सुधार की पुष्टि की है। इस घटना के बाद इजरायली प्रधानमंत्री बेजर्मिन नेतन्याहू समेत कई नेताओं ने मखर को हीरो बताया। भारत और इजरायल के बीच मजबूत संबंधों का यह एक और उदाहरण बन गया है। यह सम्मान सिर्फ एक व्यक्ति का नहीं बल्कि उन सभी का है जिन्होंने मिलकर विमान को बचाया। मखर की बहादुरी दुनिया भर में चर्चा का विषय बनी हुई है। उनके स्वस्थ होने और सम्मान समारोह का इंतजार सभी कर रहे हैं।

शक के आधार पर किसी को बांग्लादेशी बताकर नहीं निकाल सकती सरकार

बंगाल की शुभेंदु की सरकार पर भड़के जज

कोलकाता, एजेंसी।

कलकत्ता हाईकोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में गुरुवार को खुली अदालत में सुनवाई के दौरान कहा कि राज्य सरकार किसी को केवल शक के आधार पर बांग्लादेशी बताकर देश से नहीं निकाल सकती है। जस्टिस सीगत भट्टाचार्य की कोर्ट ने सरकार के इस आदेश पर फिलहाल रोक लगा दी है। जस्टिस भट्टाचार्य ने स्पष्ट किया कि अधिकारियों को लोगों को अपनी नागरिकता साबित करने का पर्याप्त मौका देना चाहिए। यह टिप्पणी मुर्शिदाबाद के एक व्यक्ति की हिरासत और उसे देश से बाहर भेजने के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई करते हुए की गई। याचिकाकर्ता के वकील ने कोर्ट को बताया कि उनके मुक्किल को कुछ पड़ोसियों के बयानों से पैदा हुए शक के आधार पर 8 अगस्त से हिरासत में रखा गया था। याचिकाकर्ता की पत्नी ने फोरिनर्स रीजनल रजिस्ट्रेशन ऑफिस



(एफआरआरओ) द्वारा उनके पति को देश से बाहर भेजने और हिरासत में लेने के आदेश को चुनौती देते हुए याचिका दायर की थी। इस मामले में पत्नी की हिरासत में नहीं लिया गया है। याचिकाकर्ता के वकील रबीउल इस्लाम ने सुनवाई के दौरान कहा, मेरे मुक्किल को दो महीने से ज्यादा समय से हिरासत में

रखा गया है। उन्हें कुछ पड़ोसियों के बयानों से पैदा हुए शक के आधार पर हिरासत में लिया गया। इस पर जस्टिस भट्टाचार्य ने सरकार के वकील से सवाल किया कि उस व्यक्ति को दो महीने तक हिरासत में क्यों रखा गया? उन्होंने यह भी पूछा कि अधिकारियों ने उसकी नागरिकता तय करने के लिए स्पष्ट और योग्य प्रक्रिया का

पालन क्यों नहीं किया? सुनवाई के दौरान जस्टिस भट्टाचार्य ने इस बात पर जोर दिया कि सिर्फ दावों के आधार पर किसी व्यक्ति की नागरिकता कैसे तय की जा सकती है? उन्होंने कहा कि उचित प्रक्रिया का पालन किए बिना किसी व्यक्ति को हिरासत में नहीं रखा जा सकता है। जज ने एक और अहम सवाल उठाया, 1970 के दशक से कितने लोगों ने सीमा पार की है? क्या उन सभी को वापस भेजना संभव है? इन टिप्पणियों के साथ, उन्होंने इस मामले को हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के पास वापस भेज दिया ताकि इसे सही बेंच को सौंपा जा सके, जो इस संवेदनशील मुद्दे पर सुनवाई कर सके। यह फैसला उन लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण राहत लेकर आया है जिन्हें केवल संदेह के आधार पर अपनी नागरिकता साबित करने और देश से निकाले जाने का सामना करना पड़ रहा है।

केंद्र सरकार की नीतियों से कुछ चुनिंदा उद्योगपति समूहों को फायदा : मल्लिकार्जुन खड़गे

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार पर आर्थिक नीतियों के जरिए एकाधिकार और दो कंपनियों के दबदबे को बढ़ावा देने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की नीतियों से कुछ चुनिंदा उद्योगपति समूहों को फायदा मिल रहा है। कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने पोस्ट कर भाजपा पर आर्थिक उदारीकरण की भावना को कमजोर करने और अपने हितों के लिए आर्थिक आतंकवाद फैलाने का आरोप लगाया। कांग्रेस नेता खड़गे ने कहा कि वर्ष 2014 से पहले इस क्षेत्र में 13 कंपनियां थीं, जबकि अब तीन बड़ी निजी कंपनियों का दबदबा रह गया है। उन्होंने घरेलू विमानन क्षेत्र का जिक्र कर कहा कि पहले सात बड़ी कंपनियां थीं, लेकिन अब प्रमुख बाजार में दो कंपनियों का प्रभाव है। उनके मुताबिक, डिजिटल भुगतान, सीमेंट और भोजन पहुंचाने वाले मोबाइल मंचों सहित कई क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा कम होने की स्थिति दिखाई देती है। कांग्रेस अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि इन नीतियों से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को नुकसान हुआ है तथा युवाओं के सामने बेरोजगारी की समस्या बढ़ी है।

दिल्ली में डेरा डाले हरीश रावत को वक्त नहीं दे रहा हाईकमान

नई दिल्ली, एजेंसी।

उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के कद्दावर नेता हरीश रावत को दिल्ली में पार्टी हाईकमान से मिलने के लिए पूरा दिन इंतजार करना पड़ा। बुधवार को ही दिल्ली पहुंचे चुके रावत को गुरुवार को कोई मुलाकात का वक्त नहीं मिल पाया। सूत्रों के अनुसार, दिल्ली में चुनाव आयोग से जुड़े एक महत्वपूर्ण मसले पर शीर्ष नेताओं की व्यस्तता के कारण उनकी मुलाकात नहीं हो सकी। अब उम्मीद जताई जा रही है कि शुक्रवार को उनकी मुलाकात प्रदेश प्रभारी सैलजा से हो सकती है। यह घटनाक्रम ऐसे समय में सामने आया है जब हरीश रावत अपनी 'जनसंवाद और धन्यवाद यात्राओं' को लेकर पार्टी हाईकमान के निशाने पर हैं। रावत ने अपनी इस स्थिति पर सोशल मीडिया के माध्यम से गहरा दुख व्यक्त किया था। उन्होंने लिखा था कि वे पिछले 60 वर्षों से कांग्रेस में हैं, लेकिन कभी उनसे कोई जवाब-तलब नहीं किया गया। उनके इस बयान ने कांग्रेस छोड़ने की अटकलों को



और हवा दे दी थी। हालांकि, इन चर्चाओं पर चुप्पी तोड़ते हुए रावत ने स्पष्ट किया कि वे कांग्रेस नहीं छोड़ सकते और गांधी-नेहरू परिवार से अपना नाता नहीं तोड़ सकते। उन्होंने भावुक होते हुए कहा कि वे कांग्रेस के झंडे में ही लिफ्टकर जाना चाहते हैं, जो उनकी पार्टी के प्रति गहरी निष्ठा को दर्शाता है। गुरुवार को दिन भर इंतजार कर रहे हरीश रावत ने दिल्ली के बसंत कुंज स्थित अपने आवास पर बागेश्वर के प्रसिद्ध टंगडियां की गींटों का स्वाद लेते हुए और अपनी नई किताब का खाका तैयार करते हुए बताया। शाम को एक मीडिया बातचीत में रावत ने

कहा कि शीर्ष नेतृत्व उनसे जो भी जानना चाहेगा, वे सभी बातें बताएंगे। उन्होंने अपने जीवन को एक खुली किताब बताया, जिसमें छिपाने जैसा कुछ नहीं है। गौरतलब है कि पूर्व मुख्यमंत्री रावत बुधवार देर रात दिल्ली पहुंचे थे और उन्होंने राष्ट्रीय महासचिव केशी वेणुगोपाल और प्रदेश प्रभारी सैलजा से मुलाकात का समय मांगा था। कांग्रेस हाईकमान ने रावत द्वारा शुरू की गई 'जनसंवाद और धन्यवाद यात्राओं' को प्रदेश संगठन के समानांतर एक शक्ति प्रदर्शन के तौर पर लिया है। राज्य के स्थानीय नेताओं की शिकायतों के बाद प्रदेश प्रभारी सैलजा ने रावत से स्पष्टीकरण मांगा था, जिससे कांग्रेस की अंदरूनी राजनीति काफी गरमाई हुई है। सैलजा के बाद, राष्ट्रीय महासचिव वेणुगोपाल भी रावत की इन यात्राओं पर कड़ा रुख जाहिर कर चुके हैं। अब रावत को शीर्ष नेताओं के सामने अपनी यात्राओं पर स्पष्टीकरण देना है। रावत के प्रति हाईकमान के बदले हुए रुख से उनके समर्थक भी खोसे बेचैन हैं।

भाजपा पर विरोधी मतदाताओं के वोट काटने का आरोप : केजरीवाल

जंतर-मंतर प्रदर्शन में शामिल होने की अपील

नई दिल्ली, एजेंसी।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने भाजपा और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार पर मतदाता सूची में कथित गड़बड़ी करने के आरोप लगाए हैं। उन्होंने दावा किया कि भाजपा को वोट नहीं देने वाले लोगों के नाम मतदाता सूची से हटा रही हैं, जबकि फर्जी वोट जोड़े जा रहे हैं। केजरीवाल ने लोकतंत्र के लिए गंभीर मामला बताकर 10 अक्टूबर को दिल्ली के जंतर-मंतर पर होने वाले प्रदर्शन को नुकसान पहुंचा रहा है। उन्होंने जोर देकर कहा कि उसे जनता का समर्थन नहीं मिलेगा और राजग की एकजुटता पर भी कोई असर नहीं पड़ेगा। नेता चिराग पासवान ने भी कहा है कि अगर विपक्ष को अब भी कुछ शंकाएँ हैं तो आयोग से सीधी बात करनी चाहिए।

का मुद्दा नहीं, बल्कि देश के लोकतंत्र और नागरिकों के मतदान के अधिकार से जुड़ा मामला है। उन्होंने प्रदर्शन में शामिल होने की घोषणा कर कहा कि वह अपने परिवार के साथ जंतर-मंतर पहुंचेंगे और अन्य नागरिकों से भी इसमें भाग लेने का आग्रह करते हैं। यह प्रदर्शन मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर उठे विवाद के बीच आयोजित हो रहा है। विपक्षी दलों का आरोप है कि इस प्रक्रिया में बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम हटाए गए हैं और इससे भाजपा विरोधी मतदाताओं को नुकसान हो सकता है। हालांकि, चुनाव आयोग और भाजपा इन आरोपों को खारिज करते रहे हैं। चुनाव आयोग का कहना है कि

मतदाता सूची को दुरुस्त करने की प्रक्रिया का उद्देश्य मृत, स्थानांतरित और दोहरा नामों जैसी गड़बड़ियों को दूर करना है। दिल्ली पुलिस ने प्रदर्शन के लिए अनुमति देने से इंकार किया है। पुलिस के मुताबिक, आयोजन की सूचना निर्धारित समय से काफी देर से का दी गई थी। इसके अलावा, कानून-व्यवस्था और सार्वजनिक सुरक्षा के लिए आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जा रहा है। विपक्षी दलों के आरोप हैं कि इस प्रक्रिया में बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम हटाए गए हैं और इससे भाजपा विरोधी मतदाताओं को नुकसान हो सकता है। हालांकि, चुनाव आयोग और भाजपा इन आरोपों को खारिज करते रहे हैं। चुनाव आयोग का कहना है कि

